स्वाधीनता सैनानी स्व० श्री विजयसिंह पथिक का स्वातंत्र्य संघर्ष के इतिहास में स्वर्णिय योगदान रहा है

—श्री शिवचरण माथुर
मुख्य मंत्री, राजस्थान

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते
जनमङ्गल
साप्ताहिक

शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, विकास एवं जनतन्त्रीय पद्धति
की चेतना का साप्ताहिक

वर्ष 21 | अंक 28 | दिनांक 21 मार्च 1982 | राज्य सरकार एवं भारत सरकार द्वारा विज्ञापन के लिए स्वीकृत | वार्षिक मूल्य 10) | एक प्रति—20 पैसे

हमें कृतज्ञ राष्ट्र के नाते पथिकजी से प्रेरणा लेनी चाहिए, वे और उनकी पीढ़ी असल में आज की आज़ादी की नींव के पत्थर हैं। उनकी अद्‌भूत संगठत शक्ति का ही परिणाम था कि १९३० से प्रारम्भ हुआ आन्दोलन १९४५ के लगभग समाप्त हुआ।

श्रीमती जानकी देवी पथिक को मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर द्वारा १० हज़ार की राशि भेंट

स्वाधीनता सैनानी और रियासती जनता में जन जागरण का शंख फूंकने वाले विजयसिंह पथिक

श्री शिवचरण माथुर

की 100 वीं जयन्ती पर जयपुर के परमानन्द हाल में उनके 'शताब्दी समारोह" का मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने उद्‌घाटन किया।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि स्वर्गीय. पथिकजी का स्वतन्त्रता के इतिहास में स्वर्णिम योगदान रहा है। उत्तर प्रदेश में जन्म लेकर भी उन्होंने राजस्थान को अपनी कर्म भूमि बनाया तथा रियासती जनता में विद्रोह की ज्वाला दहकाई। उनकी कल्पना थी कि "अंग्रेज" को यह देश छोड़ना ही होगा।

श्री माथुर ने कहा कि बिजोलिया आन्दोलन वस्तुतः दुनिया में अपनी किस्म का अभूतपूर्व आन्दोलन था। उन किसानों में 84 प्रकार की लगान देने वाले जमीदार को भूखें मरने के लिए विवश करा दिया था।

स्व. श्री विजयसिंह पथिक

मुख्यमन्त्री ने कहा कि हमें कृतज्ञ राष्ट्र के नाते उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए, वे और उनकी पीढ़ी असल में आज की आजादी की नींव के पत्थर है। उनकी संगठन शक्ति अद्‌भूत थी उसी का परिणाम था 1930 से प्रारम्भ हुआ आंन्दोलन 1945 के लगभग समाप्त हुआ।

मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने इस अवसर पर स्व. पथिकजी की वृद्धा पत्नी को शाल ओढ़ा कर तथा राज्य सरकार की ओर से 10 हजार रुपये की राशि भेंट किए जाने की घोषणा की।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि इस राशि का उपयोग माताजी जानकी देवी अपनी इच्छा से जैसा चाहे कर सकती है।

श्री माथुर ने यह भी जानकारी दी कि भारत सरकार के संचार मंत्रालय को उन्होंने पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि स्व॰ पथिक पर "डाक टिकिट" जारी किया जाए जिसे स्वीकृति मिल गई है।

अपने सम्मान का उत्तर देते हुए स्व. पथिकजी की पत्नी श्रीमती जानकी देवी पथिक ने कहा कि मुझे आज ऐसा लगता है कि पथिक जी किसी लम्बे प्रवास पर गए है।

शेष पृष्ठ 3 पर

अहम्

- जन्म-जन्मान्तरों का अहम् लेकर मैं तेरे चरणों में आ खड़ा हूं; और अपने पूर्ण-अपूर्ण काम्य तेरी पूजा में भेंट कर रहा हूं !
- भव-भवों के बाद मैं अपनी समस्त अस्मिता लेकर तेरे चरणों में आ पड़ा हूं और अपने अतृप्त विषाद तेरी अराधना में व्यक्त कर रहा हूं !
- भव के आरम्भ का यह मौन अन्त है; और चिर जीवन की मेरी मग्न कामना का यह मंगलारंभ है !
- सृजन की प्रथम पल मेरा अहं लेकर ही अद्‌भूत हुई है ! एक से अनेक होने की दिव्य कामना मेरे अहंमों का विस्तार भर है !
- हे देव ! मेरा यह अटल अहम् अपने चरणों में समेट लो जिससे मैं हल्का हो सकूं और तेरे चरणों का अमृत पी सकूं !
- हे देव ! इस अन्तरात्मा को अहम् से शून्य कर दो, जिससे भव-भव का यह मेरा और तेरा दुराव सदा के लिये दूर हो जाय !

—जनार्दनराय नागर

1

राजस्थान में राष्ट्रीय जागृति के अग्रदूत बिजोलिया आंदोलन के सूत्रधार

राजस्थान केसरी स्व० विजयसिंह पथिक

वैसे तो इस संसार में अनेकों जन्मते और मृत्यु को प्राप्त होते है, किन्तु जो व्यक्ति अपने देश और समाज हित तन, मन धन न्योछावर कर अपनी जीवन-लीला समाप्त करके जाते हैं वे मृत्यु के पश्चात् भी सदा अमर रहते हैं। ऐसे ही देश भक्तों में आधुनिक राजस्थान के निर्माता एवं भारत में सर्व प्रथम सत्याग्रह के जनक स्वर्गीय पथिक थे, जिनका कि सौभाग्य से सम्पूर्ण राजस्थान में शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है पथिकजी देश के इने-गिने उच्च कोटि के देशभक्त एवं राष्ट्रीय नेताओं में से एक थे। इनका जन्म मथुरा (उतर प्रदेश) में 24 मार्च 1982) में एक कृषक परिवार में हुआ था, जहां जनरलगज (मोहल्ले में पथिक मार्ग पर उनका स्वयं का मकान बना हुआ है और उनकी स्वर्गीय पत्नी श्रीमती जानकी देवी पथिक शिक्षा द्वारा जन-जागरण में लगी हुई हैं।

इनका बाल्य-काल बुलन्दशहर जिले के गुठावन अख्त्यारपुर में व्यतीत हुआ था। इनके पूर्वजों द्वारा सन् 1857 की सशस्त्र क्रांति में भाग लेने के कारण ही देश की भावना इन्हें पैतृक रूप में विरासत में मिली थी। इसी प्रकार इनकी माता में पुलिस के अत्याचारों का डट कर मुकाबला करने वाले निर्भीकता के गुण विद्यमान थे, जिससे बालक पथिक में भी वैसे संस्कारों का अंकुरित होना स्वाभाविक था।

यद्यपि पथिकजी उत्तर प्रदेश में उत्पन्न हुए थे, किन्तु उन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र राजस्थान बना लिया था। जिस समय वे यहां आये, उस समय राजस्थान का मानचित्र दूसरा ही था। सवत्रं सामन्तवाद का बोल-बाला था। ब्रिटिश सरकार के कुचक्रों और देशी राजाओं के स्वेच्छाचारी शासन के पाटों के बीच राजस्थान की जनता कराह रही थी। पथिक जी ने अपने जीवन पर्यन्त इन्हीं दो मोर्चों पर स्वतंत्रता के लिये एक वीर सैनिक की भांति युद्ध किया था। सन् 1914 में प्रसिद्ध क्रांतिकारी रास बिहारी घोष ने भारत को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त करने के लिये सशस्त्र क्रांति का आयोजन किया।

राजस्थान में अजमेर के समीप खरवा के सामन्त एवं ठा. गोपाल सिंह इन प्रयत्नों में सक्रिया भाग ले रहें थे, जिसमें पथिकजी भी उनके मुख्य सहयोगियों में से एक थे। क्रांति विफल रही एवं ठा. गोपालसिंह अंग्रेजों द्वारा नजरबन्द कर दिये गये थे। हमारे चरित्र नायक पथिकजी नजरबन्दी से बच कर निकल भागे और मेवाड़ में आकर शरण ले ली थी।

उस समय मेवाड़ राज्य के अन्तर्गत बिजोलिया एक सामन्ती ठिकाना था, जहां किसानों का अत्यधिक शोषण एवं उत्पीड़न हो रहा था। पथिकजी ने उनका संगठन कर शासकों के शोषण के विरुद्ध सर्व प्रथम सामूहिक किसान सत्याग्रह प्रारम्भ किया, जो 6-7 वर्ष पर्यन्त निरन्तर चलता रहा।

पूज्य बापू ने वहां कि स्थिति का अध्ययन करने के लिये उनके निजी सचिव श्री महादेव भाई

शेष पृष्ठ 4 पर

निविदा सूचना सं.5-82

क्रमांक अअउः वि. बो. निविदा/7366--7414 **दिनांक 8-3-82**

राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड, की ओर से निम्न लिखित निर्माण कार्यों हेतु मोहरबन्द निविदाएं मान्यता प्राप्त ठेकेदारों से आमन्त्रित की जाती है। कार्यों से सम्बन्धित जानकारी निम्न हस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय से किसी भी कार्य दिवस को प्राप्त की जा सकती है। निविदाए दिनांक 25-3-82 को को दिन के 2 बजे तक निम्न हस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में विक्रय की जायेगी व उसी दिन उपस्थित निविदा दाताओं के समक्ष कार्यालय में 4 बजे खोली जायेगी।

सशर्त एवं तार द्वारा प्रेषित निविदाएं अमान्य होगी। समस्त प्रकार के कर ठेकेदार को देने होंगे। धरोहर राशि नकद या बैंक ड्राफ्ट द्वारा ही स्वीकार की जायेगी। किसी भी निविदा को बिना कारण बताए अस्वीकार किया जा सकता है।

क्र. सं. कार्य का नाम	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
फतहनगर मंडी समिति				
1 निलामी चबूतरा	60,000/—	1200/—	6/—	3 माह
उदयपुर मंडी समिति				
1 आंतरिक विद्युतिकरण	20,000/—	400 /—	3/—	4 माह
प्रतापगड मंडी समिति				
1 शेष कार्य कार्यालय भवन	20,000/—	400 /—	3/—	6 माह
2 सेनेट्री फिटिंग	20,000/—	400 /—	3/—	6 माह
बांसवाड़ा मंडी समिति				
1 आंतरिक विद्युतिकरण	25,000/ –	500 /—	4/—	4 माह
2 टोयलेट	7,000/—	140 / -	2/—	4 माह

रत्नेशकुमार
अधिशाषी अभियन्ता,
राज. राज्य कृषि विपणन बोर्ड, उदयपुर

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

सम्पादकीय

स्व० श्री विजयसिंह पथिक

दिल्ली शहर के समीप बुलन्दशहर जिले के गुठावली गांव में बिजोलिया किसानों के हृदय सम्राट स्वतंत्रता सैनानी श्री विजय सिंह पथिक का जन्म १८८२ ई० में हुआ। वीर वंश में पैदा हुए पथिक जी के दादा श्री इन्द्रसिहजो ने अंगेजों से डट कर लोहा लिया। १८५७ के गदर में इनके वंशजों ने बहुत बड़ी वीरता का काम किया उस समय पथिकजी के वंशज गूजरों ने अग्रेजो का मुकाबला किया और इसी कारण इनके गांव के गांव उजाड़ दिये गये।

पथिकजी वीर और योद्धा के साथ-साथ लेखक, पत्रकार, कवि साहित्यकार भी थे। उन्होंने इतिहास और राजनीति का गम्भीर अध्ययन किया। बचपन से ही उन्होंने गांव की पंचायतों का रुप देखा था। किसानों को प्रभाव शाली शक्ति देखी थी अतः उन्हें दृढ़ निश्चय था किसान वर्ग एवं मजदूरों की मिली जुली शक्ति ही देश का उद्धार कर सकती है।

पथिक जी ने साधारण किसानों की भांति अपना जीवन बिताया उनका खान पान रहन सहन किसानों जैसा था वे किसानों की भाषा में ही बोलते व साधारण वेशभूषा में रहते। बिजोलिया सत्याग्रह किसान आन्दोलन के समय छीपे-छीपे वे किसानों के घरों में रहते किसानों का जोश बना रहता। ग्रामीण जनता के विचारों के वे अद्भुत जानकार थे। गीतों का गांव की जनता में प्रचार करने जैसा सफल प्रयोग उन्होंने किया वैसा सफल प्रयोग पहले किसी राजनैतिक नेताओं ने नहीं किया होगा। पथिक जी की संगठन शक्ति का लोहा तो उनके विरोधी भी मानते है। बिजोलिया और बेंगू में किसान पंचायतों का संगठन इतना मजबूत कर दिया कि सरकार ने उन्हें जेल में पकड़ कर उन पर मुकदमा चलाया। उस समय उनपर दोस लगाया गया कि पथिकजी ने मेवाड़ में एक नई सरकार बनाली है जिसके शासक वे स्वयं बन बैठे। हकीकत में बात यह थी कि बिजोलिया व बेगू के किसान उन्हीं पर भरोसा करते थे और उन्हीं का कहना मानते थे।

पथिकजी एक अच्छे शिक्षक भी थे। विद्यार्थियों के जीवन को मोड़ देने की उनमें उद्भुत क्षमता और कला थी। उन्होंने बिजोलिया में पाठशालाओं के बच्चों में देश भक्ति की भावना जागृत की। वहां के किसानों में भी राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भर दी। बिजोलिया किसान सत्याग्रह की सफलता इसी बात की साक्षी है कि पथिक जी ने किसानों को जाग्रत कर उन्हें अपने हकों के लिए मर मिटने की शिक्षा दी। पथिकजी ने कई अखबारों का सम्पादन भी किया जबकि समाचार पढने के नाम से लोग डरते थे। उस समय लोग देशी नरेशों व अंग्रेजों के खिलाफ समाचार पत्रों को छिपा कर पढ़ते थे। ऐसे समय में समाचार पत्रों में लिखना तो बहुत साहस का काम था। पथिक जी ने स्व० जमनालाल बजाज के सहयोग से वर्धा से "राजस्थान केसरी" का सम्पादन किया। राजस्थान केसरी पत्र निकलते ही मूक देशी राज्यों की जनता का मुख पत्र बन गया। बाद में पथिक जी ने "नवीन राजस्थान" नामक पत्र निकाला।

पथिकजी के लम्बे सम्पादन काल में जब वे वर्धा, अजमेर और आगरा के पत्रों का सम्पादन करते थे तब ऐसे कई अवसरो को उन्होंने ठुकरा दिया जब देशी नरेश लाखों रूपयों की थेलियां देकर उन्हे खरीदना चाहते। उन्होंने कभी भी दूषित धन को नहीं अपनाया?

यह हमारे दुर्भाग्य की बात है कि पथिकजी की समस्त रचनायें प्रकाशित न हो सकी। पथिकजी की रचनाओं में "पथिक विनोद" कई भागों में है। पथिक निबन्धावली, पथिक प्रमोद, प्रहलाद विजय, कल्पना कल्लोल आदि अनेक ग्रन्थ उन्होंने लिखे है।

ग्रामीण जनता को वे कविताओं से व जोशीले भाषणों से मुग्ध कर देते थे। इसी कारण वे बिजोलिया के किसानों के प्राण कहलाते थे।

आज पथिकजी हमारे बीच नहीं रहे परन्तु उनके कार्य राजस्थान के निर्माण में बहुत योग दे रहे है। हमें उनका नाम राजस्थान राज्य के निर्माताओं की श्रेणो में रखने में गर्व का अनुभव होता है।

राज्य के मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर ने पथिकजी की १०० वीं जयन्ती पर उनकी पत्नी श्रीमती जानकी देवी पथिक का सम्मान किया एवं राज्य सरकार की ओर से १० हजार रुपये की राशि भेंट करने की घोषणा कर सराहनीय कार्य किया है।

—सम्पादक

विजयसिंह पथिक जन्म शताब्दी की ओर

कुंवर राजेन्द्र
जनरल गंज, मथुरा

इस वर्ष होली पर हिन्दुस्तान अपने महान सपूत राजस्थान केसरी विजयसिंह पथिक की जन्म शताब्दी मनाने जा रहा है। क्रांतिकारी समाज सेवी, साहित्यकार एवं पत्रकार के रूप में पथिकजी का देश को अविस्मरणीय योगदान रहा है। वे भारतीय गणतन्त्र की नींव के वे पत्थर हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन स्वाधीनता संग्राम एवं जन चेतना को जाग्रत करने में लगा दिया। हालांकि राष्ट्रीय स्तर पर वे इतने चर्चित नहीं हो पाये, किन्तु भारतीय जनता के हृदय में जो स्थान महात्मा गांधी को मिला, वही स्थान राजस्थान की जनता के हृदय में पथिकजी को प्राप्त हुआ। राजस्थान निर्माता के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा।

अल्प आयु में ही माता पिता का देहान्त हो जाने के कारण पालन बड़ी बहन के सानिध्य में हुआ। १९०७ में बालक भूपसिंह शचीन्द्रनाथ सान्याल के सम्पर्क में आये और उनके साथ बंगाल पहुंचे। वहीं इनका परिचय प्रसिद्ध क्रांतिकारी रास बिहारी बोस से हुआ और उनके दल में शामिल हो गये। १९११ तक भूपसिंह बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न रहे फिर संगठन के कार्य से जोधपुर (राज.) आ गये। यहां राव साहब खरवा व अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से संगठन किया। 1914 के देश व्यापी विद्रोह के असफल हो जाने पर साथियों सहित नजरबन्द कर दिये गये। किंतु भूपसिंह नजरबन्दी तोड़कर भागने में सफल हो गये।

गिरफ्तारी से बचकर राजस्थान की पीड़ित जनता के उत्थान हेतु भूपसिंह ने अपना नाम बदलकर बिजयसिंह पथिक रख लिया और दाढ़ी व बाल बढ़ा लिये। यहां आपने सामन्ती अत्याचारों के विरुद्ध किसानों को संगठित किया और भारत प्रसिद्ध बिजोल्यां किसान सत्याग्रह का नेतृत्व किया यह भारत में पहला किसान आन्दोलन था। इसकी सफलता के बाद पथिक जी के नेतृत्व में बंगू, शेखावटी, हाड़ौती व भील आन्दोलन आदि चले तथा जनता को सफलता मिली।

जन्म शताब्दो के अवसर पर हमारा कर्तव्य है कि उनके आदर्शो विचारों का अनुसरण करें। साथ ही सरकार से यह अपील है कि वह इस महान क्रान्तिकारी की जन्मशताब्दी राष्ट्रीय स्तर पर मनाये, उनके अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित करने की व्यवस्था करावे। उनकी स्मृति को स्थायी बनाने के लिये विशेष डाक टिकट जारीं करें।

शेष पृष्ठ 1 का

उन्होंने कहा कि जब एक बार वे लम्बे समय से घर नहीं लौटे तो दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री शोभालाल गुप्ता ने अपने पत्र में छापा जिसको उन्होंने उज्जैन के पुस्तकालय में पढ़ा और वे घर लौटे।

प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह में सभी जाने माने स्वाधीनता सैनानी उपस्थित थे और मंच पर उनके संघर्षशील जीवन के साथी बेठे थे।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राजस्थान केसरी स्व. विजयसिंह पथिक

(शेष पृष्ठ 2 का)

देसाई को भेजा तथा वह आश्वासन दिया था कि यदि किसानों के प्रति अन्याय समाप्त नहीं हुआ तो वे स्वयं उनका नेतृत्व करेंगे। किन्तु सामन्त और किसानों के मध्य सम्मान पूर्वक समझौता हो गया। पथिक जी के नेतृत्व की यह एक ऐताहासिक विजय थी।

बेगू एक दूसरा सामन्ती ठिकाना था, जहां भी किसानों पर भयंकर रुप से अत्याचार हो रहे थे। आन्दोलित किसानों के एक समूह पर गोली चला दी जाने के कारण दो किसान युवक रुपाजी, करपांनी का लिदान हो गया और सैंकड़ों गिरफ्तार कर लिये गये थे। जननायक पथिक जी द्वारा यह अमानुषिक अत्याचार सहन नहीं होने के कारण वहां भी किसानों का नेतृत्व किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर राज द्रोह का अभियोग चलाया गया, किन्तु राज्य के न्यायालय द्वारा निर्दोष सिद्ध होने पर भी उन्हें तत्कालीन महाराणा की विशेष आज्ञा द्वारा पांच वर्ष के लिये उदयपुर जेल में भेज दिया गया था। पथिक बयाना आज एक धरोहर है। इस अवधि में उन्होंने उल्लेखनीय काव्य साहित्य 'प्रहलाद विजय' आदि का सृजन किया एवं सन् 1928 में जेल से मुक्त हो पाये थे।

उदयपुर जेल से मुक्त होने के पश्चात पथिकजी अ. भा देशी राज्य लोक परिषद के उपाध्यक्ष चुने गये थे। उन्होंने कांग्रेस का देशी राज्यों की ओर ध्यानाकर्षित करने में सफलता प्राप्त कर ली थी। उन्होंने 'राजस्थान सेवा संघ नामक संस्था की स्थापना की थी, जिसके सदस्यों को राष्ट्र के लिये आजीवन व्रत लेना होता था।

सन् 1930 में पथिकजी ने वर्धा से 'राजस्थान केसरी' साप्ताहिक पत्र निकाला। उसके पश्चात अजमेर में 'नवीन राजस्थान को जन्म दिया, जो आगे जा कर 'तरुण राजस्थान' के नाम से प्रकाशित होने लगा। फिर अजमेर से ही 'राजस्थान संदेश' निकालना प्रारम्भ किया। अन्त में फिर आगरा से 'नव संदेश का प्रकाशन किया। सबसे उत्तम राष्ट्रीय गान जो पथिकजी ने देश को दिया उसकी प्रथम पंक्तियां, प्राण मित्रों भले ही गंवाना, पर झण्डा न ये नीचे झुकना अचेत मन में आज भी गूंजती रहती है।

अन्त में 72 वर्ष की अवस्था में रुग्ण हो जाने के कारण उनका अजमेर में 28 मई 1954 में निधन हो गया, जहां तत्कालीन स्व॰ हरिभाऊ उपाध्याय के मुख्य मंत्रित्व में राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम किया गया।

पथिक जी द्वारा किये गये कार्यों को राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के संस्थापक एवं कुलपति श्री जनार्दन राय नागर ने उजागर किया और उनकी पुण्य स्मृति में विद्यापीठ के तत्वावधान में अजमेर में 'विजयसिंह पथिक श्रमजीवी महाविद्यालय की स्थापना की, जो सुचारु रूप से चल रहा है।

हमें चाहिए कि आज उनके शताब्दी समारोह के पुनीत अवसर पर उनकी क्रांति भावना को जारी रखने का दृढ़ संकल्प लें और इस समय देश में राजनैतिक स्वाधीनता की प्राप्ति के पश्चात जो भीषण सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएं विद्यमान हैं, उन्हें दूर करने के लिये कटिबद्ध हो जायें ताकि हमारे दिवंगत नेता को स्वर्ग में भी शान्ति अनुभव हों। (नवजीवन से साभार)

कार्यालय जिला पुलिस अधीक्षक, उदयपुर (राजस्थान)

क्रम. सं. यं-7 (3) उदय-विविध/22/ दिनांक

टेण्डर विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि पुलिस विभाग में खाली कारतुस के खोके वजनी 2049--576 ग्राम पितल (बीस क्वींटल उन पचास किलो पान सो सीतर ग्राम पीतल) ताम्बा 23--250 (तेइस किलो दौ सो पचास ग्राम ताम्बा) मेल्ट करने के लिये सीलड टेण्डर आमन्त्रित किये जाते हैं। इच्छुक व्यक्ति अपने टेण्डर निर्धारित फार्म पर दिनांक 20--4.-81 तक कार्यालय समय में प्रेषित करें। निर्धारित समय के पश्चात प्राप्त होने वाले अथवा टेण्डर फार्म में प्राप्त नहीं होने पर विचार नहीं किया जायगा। टेण्डर फार्म पांच रुपया प्रति फार्म की दर से कार्यालय हाजा में नकद जमा कराने पर या मनिआर्डर द्वारा रकम भेजकर प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्राप्त शुदा टेण्डर दिनांक 21--4--1981 को 11 बजे दिन को टेण्डर खोले जायेगें टेण्डर दाता या उनके प्रतिनिधि टेण्डर खोलने के समय उपस्थित रह सकेंगे। प्रत्येक टेण्डर प्रेषित करने वाले को रुपया 500/—पान सौ रुपये अर्नेस्टमनी के जमा कराना होगा। जिस टेण्डर के साथ अरनेंस्ट मनी जमा नहीं होगी उस टेण्डर पर कोई विचार नहीं किया जायगा। सक्षम अधिकारी को पूरा अधिकार होगा कि बिना कारण बताये किसी का भी टेण्डर अनुमोदित करें उसे मान्य समझा जावेगा। जिसका टेण्डर अनुमोदित होगा उसे सिक्यीरीटी की रकम जमा कराना होगा जो कार्य समाप्त होने पर पेमेंट के साथ वापस लौटाई जावेगी। टेण्डर अनुमोदित के अलावा टेण्डर दाताओं की अरनेंस्टमनी वापस उसी दिन लौटा दी जावेगी। किसी कारण वश कार्यालय में टेण्डर खोलने की दिनांक को पुलिस अधीक्षक के उपस्थित नहीं होने पर उक्त समय के बाद भी टेण्डर खोले जा सकेंगे।

खाली कारतुसों का मेल्ट पुलिस लाइन्स, उदयपुर में करना होगा मेल्ट करने के लिये जो भी सामान की आवश्यकता होगी उसका सारा खर्चा टेण्डर दाता को वहन करना होगा तथा इसका प्रवन्ध टेण्डर दाता को ही करना पड़ेगा। कोयले की राख वापस नहीं दी जायेगी मेल्ट करने का सामान लाने ले जाने का टेण्डर दाता को ही वहन करना पड़ेगा। एडवांस पेमेन्ट नहीं किया जावेगा।

सक्षम अधिकारी द्वारा टेण्डर की स्वीकृति होने के बाद दो माह के अन्दर अन्दर जब भी निम्न हस्ताक्षरकर्ता तिथि नियत करें उस अवधि में कार्य पूरा करना पड़ेगा कार्य प्रारम्भ करने के बाद किसी भी अवस्था कार्य बन्द नहीं किया जा सकेगा।

(अरुण दुगड़)
जिला पुलिस अधीक्षक
उदयपुर 313001

डी.पी.आर. 1366/82/7707-10

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ओह, फिर से मलेरिया!

समय पर इलाज करें, इसको जड़ से खत्म करें

आप के आस-पास खतरा है मलेरिया के प्रकोप का। यह एक खतरनाक बीमारी है। इसे समय रहते रोकें। इसका इलाज तो है, पर पक्की रोकथाम ज्यादा असरदार है।

कारण :

- मलेरिया छोटे से परजीवियों द्वारा फैलता है।
- रोगी व्यक्ति को काटने के बाद, मच्छर मलेरिया के कीटाणु एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में छोड़ देता है।
- जमा हुए पानी में मलेरिया के मच्छर पनपते हैं।
- समय पर रोगी का उपचार न होने से, बीमारी के फैलने का खतरा होता है।

लक्षण :

१. कंपकपी के साथ अचानक तेज बुखार आना।
२. बेहद गर्मी महसूस करना एवं तेज सिर दर्द होना।
३. बाद में अधिक मात्रा में पसीना आना, बुखार उतरना एव कमजोरी महसूस होना।

सावधान :

प्रमस्तिष्क या सांघातिक मलेरिया से मानसिक परेशानी भी हो सकती है जिसके बढ़ने से रोगी सन्निपात या बेहोशी की दशा में पहुंच सकता है अगर समय रहते इसका इलाज न किया जाए तो जीवन के लिए यह घातक हो सकता है।

उपचार :

- रोगी के खून की जांच शीघ्र करवाएं।
- सम्भावित उपचार के लिए क्लोरोक्विन की गोलियां लें।
- अगर बुखार मलेरिया ही है तो पांच दिन तक लगातार दवाई खायें।

मलेरिया कर्मचारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेन्सरी एवं अस्पतालों से संपर्क करें जहां ये सुविधाएं मुफ्त दी जाती हैं।

रोकथाम के उपाय

- अपने घरों या घर के आस पास, गड्ढों, नालियों, गमलों, फालतू पड़े डिब्बों आदि में पानी जमा न होने दें।
- सप्ताह में एक बार टंकी, टबों, घड़ों आदि को खाली करें।
- अपने गांव या मुहल्ले में छिड़काव दलों की मदद करें।
- अपने घर के हर कोने में अच्छी तरह छिड़काव कराएं। स्टोर, रसोई, पूजा का कमरा, पशु बांधने की जगह आदि में भी छिड़काव कराएं। छिड़काव के समय, खाने की वस्तुएं और चारे आदि को ढक कर रखें।
- छिड़काव के फौरन बाद दीवारों पर सफेदी या मिट्टी का लेप न करें।

किसी भी बुखार की सूचना स्वास्थ्य कर्मचारियों को शीघ्र दें।

राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम
(स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय)
22 शामनाथ मार्ग, दिल्ली-110054

davp 81/16

चल रहा है। अशोका में **श्रीमान् श्रीमती**	चल रहा है पिक्चर पेलेस में **खून का रिश्ता**	चल रहा है। स्वप्नलोक में **दर्द**	चल रहा है। चेटक में **जानी दुश्मन**

(7) (6)

कुंवर गजेन्द्र सिंह पवार
जनरल गंज
मथुरा (यू.पी.)

र. जे 7009

टेण्डर विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उदयपुर पुलिस लाईन में ग्यारह सरकारी मेसों के लिए निम्नलिखित राशन दिनांक 1–5–82 से 31–3–1983 तक के लिए आवश्यकता है। जो व्यक्ति सप्लाई करने के इच्छुक हो वे अपने टेण्डर सील बन्द लिफाफे में दिनांक 16-4-82 को इस कार्यालय समय में प्रस्तुत करें। इस समय के पश्चात टेण्डर निर्धारित फार्म में नही होने पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

टेण्डर फार्म 5 रुपया प्रति फार्म की दर से नकद जमा कराने पर बकाया मनीआर्डर द्वारा रकम भेज प्राप्त किये जा सकते हैं।

1—चने का दलिया (जिसमें कंकड व सडे हुए न हो)
2—जो का दलिया – ,,
3—नमक देशी पीसा हुआ एवं रोक साल्ट
4—गेहूं का चापड

जो व चने का दलिया का सेम्पल टेण्डर प्रेषित करते समय देना अनिवार्य होगा उक्त आर्टिकल टेण्डर निर्धारित समय के पहले इस कार्यालय में देकर रसीद प्राप्त की जा सकती है। या रजिस्ट्री द्वारा पोस्ट आफिस से भेजे जा सकते हैं।

उक्त आर्टिकल में किये गये आईटम पर राज्य सरकार द्वारा प्रतिबन्द होने पर इस कार्यालय में जिनके नाम टेण्डर पास होगा उसके द्वारा प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने पर सिफारिश कर दी जावेगी।

प्राप्त सुदा टेण्डर दिनांक 17-4-82 को 12 बजे इस कार्यालय में खोले जावेंगे। टेण्डर दाता या उनके प्रतिनिधि टेण्डर खोलने के समय उपस्थित रह सकेंगे प्रत्येक टेण्डर प्रेषित करने वाले को रुपया 700/—बतौर अर्नेष्ट मनी के टेण्डर के साथ जमा कराना अनिवार्य होगा। जिस टेण्डर के साथ अर्नेस्ट मनी नहीं होगी उस पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

इस कार्यालय को पूरा अधिकार होगा कि बिना कारण बताये किसी भी टेण्डर पर कार्यालय द्वारा निर्णय लिया जाय तो वह सर्व मान्य होगा। प्राप्त सुदा टेण्डर में अंकित रेट मार्केट रेट से अधिक आने पर बिना कारण बताये टेण्डर निरस्त कर टेम्परेरी टेण्डर एप्रुण्ड किये जा सकते हैं जा टेण्डर दने वालों को मान्य होगा। हर एक माह की सामग्री एक माह की एडवांस पुलिस लाईन उदयपुर में रखनी होगी उक्त सामान के लिए सिर्फ एक मकान बिना चार्ज के किराये दिया जावेगा। जिन जिन व्यापारियों के जो जो आर्टिकल पास होगा उसको भी इसे मकान में रखना होगा समय समय मकान नहीं दिया जावेगा। सामान एक साथ क्रय नहीं किया जाकर प्रतिदिन लिया जावेगा।

अरुण दुगड़
जिला पुलिस अधीक्षक
उदयपुर – 313001

डी.पी.आर 1325/82/8092-96

प्रकाशक एवं संस्थापक-अध्यक्ष जनार्दनराय नागर, सम्पादक कालूलाल जैन मुद्रक नारायणलाल गुर्जरगौड़ विद्यापीठ प्रेस, उदयपुर।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

अधिकार दैनिक
चन्दे की दरें :
वार्षिक रु. 200.00
अर्द्ध वार्षिक रु. 100.00
त्रैमासिक रु. 55.00
शाखा कार्यालय :
1. सेठ कंवरलाल जी का नोहरा, रामपुरा, कोटा-324006
2. भादरा हाउस, के.ई.एम. रोड, चौतीना कुआ, बीकानेर।
3. 5ए/86 एन. आई. टी., बी. के. दत्त रोड, फरीदाबाद (हरि.)

जयपुर, कोटा, बीकानेर एवं फरीदाबाद से एक साथ प्रकाशित

अधिकार

स्थापित १९५६ ई.

अधिकार दैनिक का एजेन्सी लेने के लिए लिखें या मिलें :
वितरण व्यवस्थापक :
अधिकार दैनिक जयपुर-302003
फोन । जयपुर 72475
बीकानेर 3713
कोटा 5212
उदयपुर 6553

डाक पंजीयन संख्या आर. जे. 2553

विमान; रेल व बस सेवा शुल्क 3 पैसे अतिरिक्त

वर्ष 27 । अंक 75 — जयपुर, 1982, मार्च 22 सोमवार — मूल्य 35 पैसे

उ. जापान में भूकम्प से ८० व्यक्ति मरे

टोकियो, मार्च 21 (भा)। उत्तरी जापान में भयंकर भूकम्प से अस्सी व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

यहां प्राप्त समाचारों के अनुसार प्रभावित क्षेत्र में बड़ी संख्या में मकान ध्वस्त हो गये है। राहत कार्य शुरू कर दिया गया है।

अलीगढ़ में दूसरे दिन भी कर्फ्यू जारी

लखनऊ, मार्च (भा)। कर्फ्यू ग्रस्त अलीगढ़ शहर में कल के बाद कोई अन्य अप्रिय घटना नहीं हुई है और वहां शांति कायम है।

गृह विभाग के एक प्रवक्ता ने आज शाम यह जानकारी भारती को यहां दी। उन्होंने बताया कि कल लागू किया गया कर्फ्यू आज भी जारी रहा।

५० हजार के जवाहरात लेकर फरार

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21। रामगंज पुलिस ने एक युवक के खिलाफ धोखाधड़ी कर 50 हजार के हीरे जवाहरात लेकर फरार हो जाने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार रिपोर्ट कर्ता हसनकुमार जो हीरे जवाहरात का कार्य करता है उससे उसका मित्र अब्दुल मजीद उर्फ हरिया नौ तोले का हार, पन्ना के चार टुकड़े तथा कीमती मोतियों के हार किसी ग्राहक को दिखाने के बहाने गत दिवस लेकर फरार हो गया।

पुलिस फरार हरिया की तलाश में है।

युवती को फरार करने पर मुकदमा

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21 पुलिस ने एक शादी शुदा युवक के खिलाफ एक अविवाहित युवती को लेकर फरार होने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार लोको-कालोनी निवासी 21 वर्षीय मधु को रेल्वे विद्युत गृह में कार्यरत मदन नामक युवक गत दिवस लेकर फरार हो गया जो कि शादी शुदा है। तथा उसके दो बच्चे भी हैं।

मिली जानकारी के अनुसार मधु एम. आई. रोड स्थित किसी कैमिस्ट की दूकान पर नौकरी करती थी तथा उसके मदन के साथ गत माहों से पारिवारिक सम्बन्ध थे।

पुलिस ने मामला दर्ज कर दोनों की खोज शुरू कर दी है।

श्रीमती जानकी देवी पथिक को मुख्यमन्त्री माथुर द्वारा १० हजार की राशि भेंट

पथिकजी का स्वातंत्र्य संघर्ष में स्वर्णिम योगदान—माथुर

जयपुर, मार्च 21। स्वाधीनता सैनानी और रियासती जनता में जन जागरण का शंख फूंकने वाले विजयसिंह 'पथिक' की 100 वीं जयन्ती पर आज स्थानीय परमानन्द हाल में उनके 'शताब्दी समारोह' का मुख्यमन्त्री शिवचरण माथुर ने उद्घाटन किया।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि स्वर्गीय पथिकजी का स्वतन्त्रता के इतिहास में स्वर्णिम योगदान रहा है। उत्तर प्रदेश में जन्म लेकर भी उन्होंने राजस्थान को अपनी कर्म भूमि बनाया तथा रियासती जनता में विद्रोह की ज्वाला दहकाई। उनकी कल्पना थी कि 'अंग्रेज' को यह देश छोड़ना ही होगा।

उन्होंने कहा कि बिजोलिया का 'किसान आंदोलन' वस्तु दुनिया में अपनी किस्म का अभूतपूर्व आंदोलन था। उन किसानों ने 84 प्रकार की लगान लेने वाले जमीदार को भूखों मरने के लिए विवश करा दिया था।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि हमें कृतज्ञ राष्ट्र के नाते उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये, वे लोग उनकी पीढ़ी असल में आज की आजादी के नींव के पत्थर हैं। उनकी संगठन शक्ति अद्भुत थी उसी का परिणाम था 1930 से प्रारम्भ हुआ आंदोलन 1945 के लगभग समाप्त हुआ।

मुख्यमन्त्री शिवचरण माथुर ने इस अवसर पर स्वर्गीय पथिक जी की वृद्धा पत्नी को शाल ओढ़ा कर तथा राज्य सरकार की ओर से 10 हजार की राशि भेंट किये जाने की घोषणा की।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि इस राशि का उपयोग माताजी जानकी देवी अपनी इच्छा से जैसा चाहें कर सकती हैं।

उन्होंने यह भी जानकारी दी कि भारत सरकार के संचार मंत्रालय को उन्होंने पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि स्व. पथिक पर 'डाक टिकिट' जारी किया जाय जिसे स्वीकृति मिल गई है।

अपने सम्मान का उत्तर देते हुए स्व. पथिक जी कि पत्नीश्रीमती जानकीदेवी ने कहा कि मुझे आज ऐसा लगता है पथिक जी किसी लम्बे प्रवास पर गये हैं।

उन्होंने कहा जब एक बार वे लम्बे समय तक घर नहीं लौटे तो 'दैनिक हिन्दुस्तान' के सम्पादक शोभालाल गुप्ता ने अपने पत्र में छापा-जिसको उन्होंने उज्जैन के पुस्तकालय में पढ़ा और वे घर लौटे।

प्रारम्भ से स्वागताध्यक्ष जुगल किशोर चतुर्वेदी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह में सभी जाने माने स्वाधीनता सेनानी उपस्थित थे और मंच पर उनके संघर्षशील जीवन के साथी बैठे थे। उन साथियों में बिजोलिया आन्दोलन के इतिहास लेखक शंकर सहाय सक्सेना भी उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात स्वातन्त्र्य वीर रामनारायण चौधरी ने की।

—

अस्थाई कर्म. की जगह नये कर्मचारी रखने का निर्देश

जयपुर, मार्च 21। राज्य सरकार ने एक आदेश द्वारा प्रदेश के सभी जिलाधीशों और विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया है कि तीन वर्ष से कम अवधि वाले अस्थाई कर्मचारियों के स्थान पर वैकल्पिक व्यवस्था कर लें।

राज्य सरकार ने यह भी निर्देश दिया है कि कनिष्ठ लिपिकों के स्थान पर 16 रु. प्रतिदिन के हिसाब से, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के स्थान पर 10 रु प्रतिदिन के हिसाब से और ड्राईवरों के स्थान पर 20 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से नये व्यक्तियों को रखा जा सकता है।

राज्यकर्मचारियों की प्रान्त व्यापी हड़ताल से उत्पन्न हुई स्थिति के कारण राज्य सरकार ने वैकल्पिक व्यवस्था के लिए ऐसे निर्देश दिये है।

राज्य सरकार हर स्थिति में कर्मचारियों की इस आम हड़ताल से निपटने के लिए कटिबद्ध है। अव्यवस्था उत्पन्न करने वाले, अन्य काम पर आने वाले कर्मचारियों को भड़काने और हड़ताल के लिए उकसाने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने के भी निर्देश राज्य सरकार ने जिलाधीशों और विभागाध्यक्षों को दिये है।

एकता के बारे में हमें पूरा भरोसा -चंद्रशेखर

बम्बई, मार्च 21 'भा'। जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने आज यहां कहा कि राजनैतिक तथा आर्थिक स्थिति को देखकर ही जनता पार्टी ने विपक्षी एकता का प्रस्ताव किया है। एकता होगी इस बारे में हमें पूरा भरोसा है।

चन्द्रशेखर पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राजनैतिक तथा आर्थिक स्थिति को सामने रखकर ही एकता होनी चाहिये।

उन्होंने बताया कि 1976 में वेतनमानों का केवल सरलीकरण किया गया और वेतन में महंगाई भत्ते का विलय कर दिया गया। इस समय राज्य सरकार के भत्ते की 5 किश्तें दी।

प्रवक्ता के अनुसार एक मार्च 1979 को 'बेरी आयोग' कोगठित किया गया था और एक वर्ष में रिपोर्ट देने के लिये कहा गया था जिसने अपनी रिपोर्ट 28 महीने में दी, जिस पर भी सरकार ने निर्णय करने में 3 महीने लगा दिये।

देवरस केशवपुरा का उद्घाटन करेंगे

(कार्यालय प्रतिनिधि)

जयपुर, मार्च 21। बाढ़ से क्षतिग्रस्त हुए तीन गांवों के 63 परिवारों को बसाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा बसाये गये आदर्श गांव 'केशवपुरा' का उद्घाटन आगामी दो अप्रेल को सरसंघ चालक बालासाहब देवरस करेंगे।

यह जानकारी आज उक्तगांव का पत्रकारों को भ्रमण कराते हुए, परियोजना अधिकारी कौशल किशोर जैन ने दी।

ग्राम के बीच एक सभा भवन और शिवालय का निर्माण भी किया गया है और राज्य सरकार की स्वीकृति मिलने पर चिकित्सालय और स्कूल भवन भी बनाया जायेगा।

उन्होंने बताया कि सड़क और बिजली मिलाकर प्रत्येक मकान पर कोई दस हजार की लागत आई है।

'राजस्थान श्री' की सूची घोषित

जयपुर मार्च 21। राजस्थान दिवस समारोह समिति की एक विज्ञप्ति के अनुसार राजस्थान श्री की उपाधि निम्न व्यक्तियों को दी जायेगी।

मोहनलाल सुखाडिया, मिस लूथर (मरणोपरांत) डा. नागेन्द्र सिंह, डा. पी. के. सेठी, श्रीमती अल्लाजीलालीबाई, महाराजा भवानी सिंह, खेल शंकर दुर्लभ जी, भावरमल शर्मा, कपूर चन्द कुलिश प्रो. आर. सी. महरोत्रा, विमलजी सुराना, एन. डी., बांगड, असरानी, गोपाल सैनी, वीरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल एडवोकेट, विजयदान देथा, रवि प्रकाश नाग, जमनादास अजमेरा, कोटभाई, अब्दुल बशीर मयूख, डी. पी. साबू, श्रीमति ऊषारानी हूजा, सरदार कुदरत सिंह, गुरु हनुमान, कृपाल सिंह शेखावत।

—

भाकपा की १२ वीं कांग्रेस आज से शुरू

वाराणसी मार्च 21 (भा)। भाकपा की 12 वीं, कांग्रेस यहां कल से प्रारम्भ होगी। कार्यक्रम के अनुसार पार्टी की नयी राष्ट्रीय परिषद का चुनाव 27 मार्च को होगा तथा संगठन की विभिन्न समितियों का भी गठन होगा।

पाक का मजबूत होना भारत के हित में —जियाउलहक

इस्लामाबाद, मार्च21 (भा)। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया उलहक ने कहा है कि पाकिस्तान को अमेरिका से जो हथियार मिल रहे हैं उससे पाकिस्तान में स्थिरता आयेगी।

कल संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि पाकिस्तान का मजबूत होना भारत के हित में है। उन्होंने कहा कि भारत को भी इस मामले को इसी रूप में लेना चाहिये।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि युद्धवर्जन समझौते पर दोनों देशों की वार्ता शीघ्र फिर शुरू हो जायेगी।

पाकिस्तान के नये विदेशमन्त्री साहिबजादा याकूब अली खां ने भी आशा व्यक्त की है कि युद्धवर्जन संधि वार्ता में उत्पन्न व्यवधानशीघ्र ही दूर हो जायेगा।

जगदीश डाकू मारा गया

जयपुर मार्च 21 (भा)। भरतपुर पुलिस ने उतांगना नदी के बीहड़ों में कुख्यात डाकू जगदीश ब्राह्मण को एक मुठभेड़ में मारने में सफलता प्राप्त की है लेकिन जगदीश का दूसरा साथी अमर सिंह भागने में सफल हो गया।

यह जानकारी देते हुए भरतपुर रेंज के उप महानिरीक्षक अमिताभ गुप्ता ने भारती को बताया कि पुलिस को जगनीश ब्राह्मण के उतांगना के बीहड़ों में होने की जानकारी दी गयी थी।

जगदीश ब्राह्मण कुख्यात डाकू था जिसकी तलाश 7974 से अब तक उत्तरप्रदेश मध्य प्रदेश राजस्थान में चोरी डकैती व अपहरण की 23 वारदातों के सिलसिले में की जा रही थी। उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश की पुलिस ने इसे जिन्दा या मुर्दा पकडने पर ईनाम भी देने की घोषणा कर रखी थी।

विपक्षी विधायक २६ मार्च को राष्ट्रपति को ज्ञापन देंगे

जयपुर मार्च 21। राज्य विधान सभा कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिये स्थगित किये जाने के मामले को लेकर विपक्षी विधायक 26 मार्च को संसद भवन के सामने धरना देंगे तथा राष्ट्रपति को एक ज्ञापन देंगे।

यह निर्णय आज यहां कांग्रेस (एस) के नेता राज बहादुर की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में समस्त विपक्षी दलों के विधायक उपस्थित थे।

इस बैठक में विधान सभाध्यक्ष द्वारा बजट सत्र में अपनाये गये रवैये की कटु आलोचना की गई तथा सत्र को अचानक स्थगित करने की कार्यवाही के विरुद्ध राज बहादुर की अध्यक्षता में संघर्ष समिति गठित की गई।

इस बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि 23 मार्च को समस्त विपक्षी विधायक सामूहिक रूप से राज्यपाल से भेंट करेंगे तथा सायंकाल माणक चौक चौपड पर आम सभा करेंगे। 28 मार्च को विधान सभाध्यक्ष के निवास पर समस्त विधायक धरना देंगे। तथा ईसके पश्चात विपक्षी विधायक 26 मार्च को दिल्ली जायेंगे। उक्त कार्यक्रम को सुनियोजित ढंग से सम्पन्न करने के लिये लोकदल के विधायक यदुनाथ सिंह के संयोजन में व्यवस्था समिति गठित की गई है।

उत्कृष्ट विकलांग व्यक्ति सम्मानित

नयी दिल्ली मार्च 21 (भा) राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने आज राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में आयोजित एक समारोह में अपना रोजगार करने वाले उत्कृष्ट विकलांग व्यक्तियों उत्कृष्ट विकलांग कर्मचारियों को राष्ट्रपति द्वारा यह पुरस्कार विकलांग व्यक्तियों के कल्याण के लिए प्रदान किये जाते है।

पुरस्कार वितरित करते हुए राष्ट्रपति रेड्डी ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि पुरस्कार विजेताओं ने विकलांग होने के बावजूद स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किये और इसमें वह सफल रहे।

मुख्य मन्त्री आम आदमी के बीच

जयपुर मार्च 21 (भा)। मुख्य मन्त्री शिवचरण माथुर ने आज आमआदमी के बीच कार्यक्रमके अन्तर्गत आकाशवाणी जयपुर केन्द्र पर पत्रकारों छात्रों आदि से वार्ता की जिसमें अनेक प्रश्नों पर चर्चा की गयी।

आकाशवाणी केन्द्र पर केन्द्रीय उपमन्त्री आरिफ मोहम्मद खां ने मुख्य मन्त्री का स्वागत किया और बताया कि उनका यह कार्यक्रम उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

बड़ोदा दंगा क्षेत्र में पुन: कर्फ्यू लगाया

बड़ोदा, मार्च 21 (भा)। कर्फ्यू में आज बारह घन्टों की ढील के दौरान दंगाग्रस्त क्षेत्र जहांगीरपुरा से खंजर घोंपने की एक वारदात हुई। अन्य क्षेत्रों में पथराव व छिटपुट वारदात को छोड़कर स्थिति शांत किन्तु तनावपूर्ण रही। दंगाग्रस्त क्षेत्रों में आज सायं सात बजे से कल प्रातः सात बजे तक पुनः कर्फ्यू लागू कर दिया गया है।

दो तीन असामाजिक तत्वों को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया है।

प्रवेशिका पुराने पाठ्यक्रम की परीक्षा आज

जयपुर, मार्च (भा)। शिक्षा विभाग की एक विज्ञप्ति के अनुसार राजस्थान में 22 मार्च को प्रातः होने वाली प्रवेशिका नये पाठ्यक्रम की परीक्षा माध्यमिक शिक्षा द्वितीय हिन्दी पत्र के साथ 8 अप्रेल को होगी। परन्तु प्रवेशिका पुराने पाठ्यक्रम की परीक्षा 22 मार्च को ही होगी।

शिक्षा विभाग ने दावा किया किया है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षा स्थिति में निरन्तर सुधार हो रहा है तथा परीक्षा व्यवस्था में जन सहयोग मिल रहा है। 787 परीक्षा केन्द्रों में से कल 15 केन्द्रों में ही परीक्षा नहीं हो सकी।

सड़क दुर्घटनाओं में दो घायल

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21। शहर में आज सायं हुई दो सड़क दुर्घटनाओं में दो व्यक्ति घायल हो गये।

मिली जानकारी के अनुसार स्थानीय जलेबी चौक में एक मोटर साईकिल की चपेट में आकर 23 वर्षीय कौशल्यादेवी नामक महिला गम्भीर रूप से घायल हो गई।

इसी प्रकार विश्वविद्यालय मार्ग पर मोटर साईकिल एवं स्कूटर में टक्कर हो जाने से स्कूटर स्कूटर सवार जी एस. भार्गव नामक घायल हो गया। दोनों घायलों को चिकित्सा हेतु को सवाईमानसिंह अस्पताल में भर्ती करा दिया हैं।

जेल स्थित कुए में कैदी की लाश मिली

भरतपुर, मार्च 21 (भा)। जिला जेल धौलपुर में एक कैदी की जेल स्थित कुये में लाश मिली हैं।

जब कैदियों की गिनती की गई तब एक कैदी भगवानदास को नदारत पाया गया।

भगवानदास की जब जेल में खोज खबर की गई तो जेल के कुए की मुंडेर पर कपड़े व जूते दिखाई दिये तब कुए से कैदी की लाश निकाली गई।

९ जनें जुआ खेलने के आरोप में गिरफ्तार

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21 कोतवाली पुलिस ने नौ व्यक्तियों को जुआ खेलने के आरोप में गिरफ्तार कर उनके कब्जे से ग्यारह सौ रुपये बरामद किये है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार गिरफ्तार व्यक्ति किशनपोल स्थित प्रेम नामक व्यक्ति के घर पर जुआ खेल रहे थे।

हरियाणा की नहरों के आधुनिकीकरण पर १६७ करोड़ रुपए खर्च किये जायेंगे

नई दिल्ली, मार्च 21। हरियाणा की वर्तमान नहरों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। इस पर 167 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत आएगी।

योजना आयोग ने आधुनिकीकरण की योजना को स्वीकृति दे दी है।

इस योजना के प्रथम चरण पर विश्व बैंक की सहायता से काम चल रहा है। इस योजना में भाखड़ा और पूर्वी यमुना नहर प्रणालियों का सुधार किया जायेगा। इससे प्रति वर्ष 96,337 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि की सिंचाई की जा सकेगी।

द्वितीय चरण परियोजना के पहले चरण का विस्तार है। इसमें 3717 कि. मी. लम्बी भाखड़ा और पश्चिमी यमुना नहर प्रणालियों का विस्तार किया जायेगा।

इससे 1,16,144 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि की सिंचाई की जा सकेगी।

कर्मचारी नेताओं का दावा

राज्य प्रशासन सौ फीसदी ठप्प पड़ा है

जयपुर, मार्च 21। राज्य कर्मचारियों की संघर्ष समिति की संयुक्तकमान के अधिकृत प्रवक्ता मोहनलाल जैन ने आज संवाददाताओं को बताया कि प्रदेश में राज्य प्रशासन सौ फीसदी ठप्प पड़ा है और राज्य सरकार का यह दावा निराधार है कि उनकी वैकल्पिक व्यवस्था से प्रशासन चला रहा है।

उन्होंने पत्रकारों को जानकारी दी कि 23 मार्च को हाई स्कूलों के प्रधानाध्यपक, सहायक सचिव, सचिवालय के अनुभाग अधिकारी, उप सचिव, निजी सचिव, विधि रचना अधिकारी जिनकी कुलसंख्या2000 के लगभग होगी आम हड़ताल में शामिल हो जायेंगे।

उन्होंने जानकारी दी कि राज्य के मुख्य सचिव ने कल 11 बजे कर्मचारी प्रतिनिधियों को वार्ता के लिए बुलाया है। आगे क्या कदम उठाये जायेंगे यह तो वार्ता के बाद ही तय किये जायेंगे।

कमान के अन्य प्रवक्ता राम किशोर अग्रवाल ने बताया कि राज्य के सभी जिलों में प्रदेश स्तर के 50 पदाधिकारी नियुक्त किये गये हैं जिन्होंने तार द्वारा सूचित किया है कि सभी स्थानों पर प्रशासन ठप्प पड़ा है जिससे राज्य सरकार को प्रतिदिन कोई 1 करोड़ रूपये की हानि हो रही है।

कर्मचारी प्रवक्ता मोहनलाल जैन ने पत्रकारों को बताया कि प्रथम वेतन आयोग 1968 में बैठा जिसके बाद 16 मार्च 1979 को बेरी वेतन आयोग गठित किया गया।

—

टेलीफोन विभाग द्वारा त्रुटिपूर्ण बिलों की संख्या कम करने हेतु अनेक उपाय

नई दिल्ली मार्च 21 (काप) डाक व तार विभाग ने तकनीकी दोषों के कारण अधिक रकम के बिल आने के कारणों का पता लगाने के लिए कई अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों के आधार पर मीटर दोषों को समाप्त करने के लिए नए मीटरिंग परिपथ चालू किए गए हैं। चार्ज विश्लेषक यंत्र जो कि शिकायतकर्ता उपभोक्ता द्वारा की गई एस. टी, डी. कालों का अलग-अलग ब्यौरा सूचित करेगा, क्षेत्र परीक्षणों के बाद लगाये जाने का प्रस्ताव है।

एस. टी. डी. के दुरूपयोग को रोकने के लिए सतर्कता दस्तों का गठन किया गया है ताकि आकस्मिक निरीक्षण करके अनाधिकृत कनेक्शनों, विपथन आदि का पता लगाया जा सके। वितरण पाइन्टों तथा केबिनेटों को ताले में रखने के आदेश दिए गए हैं। इसके अलावा दोषों का पता लगाने के लिए मीटरों को नियमित रूप से जांच की जाती है।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

खेतड़ी इंकां अध्यक्ष को निलम्बित किया जाय

खेतड़ी। खेतड़ी युवक कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष अब्दुलख ने प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष ने मांग की है कि खेतड़ी नगर के इंकां अध्यक्ष विश्वनाथ शर्मा को कांग्रेस (आई) से निकाला जाय। क्यों विश्वनाथ शर्मा ने नगरपालिका के हाल ही हुए चुनावों में इंकां समर्थित अध्यक्ष पद के उम्मीदवार ताराचन्द शास्त्री का विरोध किया था और पार्टी में दरार पटकने के लिए रामकरण सैनी को अध्यक्ष पद का चुनाव लड़वाया था।

प्रदेश भाजपा का अधिवेशन अजमेर में होगा

अजमेर, मार्च 21। राजस्थान प्रदेश भारतीय जनता पार्टी का प्रदेश अधिवेशन चौदह से सोलह मई को अजमेर में होगा।

अधिवेशन में दस हजार प्रतिनिधियों के भाग लेने की सम्भावना है अधिवेशन के लिए नेताओं ने धनसंग्रह अभियान शुरू किया।

जनगणना कर्म. आज आंदोलन तेज करेंगे

जयपुर, मार्च 21। जनगणना अस्थाई कर्मचारी कल्याण परिषद की मांगों के समर्थन में आज 48 वें दिन भी क्रमिक अनशन रहा। संघर्ष समिति ने 22 मार्च से समस्त सारणीयन कार्यालय अनिश्चित काल के लिए बन्द करने की घोषणा की है।

—

हरियाणा कांग्रेस-इं : जाट गुट ऊपर आने को उत्सुक

मधु सुदन शर्मा

हरियाणा विधानसभा के आम चुनाव, जो आगामी जून में ही होने जा रहे है, जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे है, हरियाणा की राजनीति में सरगर्मी आती जा रही है। इसमें विशेषकर सरगर्मी प्रदेश की सत्तारूढ़ पार्टी हरियाणा प्रदेश कांग्रेस-इ में देखी जा रही है।

पिछले कुछ दिनों से प्रदेश कांग्रेस-इ के दो गुटों-बन्सीलाल व भजनलाल के बीच रस्साकशी परोक्ष रूप से होने लगी है। हांलाकि केन्द्रीय नेतृत्व से चौ. बन्सीलाल के गुट को कोई प्रश्रय नहीं मिल पा रहा है लेकिन फिर भी वह मुख्यमन्त्री चौ. भजनलाल के खिलाफ मोर्चे पर डटा हुआ है। चौ. बन्सीलाल के गुट के पास भजनलाल गुट के खिलाफ एक ही पांसा है कि भजनलाल व उनके साथी दल बदलू हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें कांग्रेस-इ में वह इज्जत व सम्मान नहीं मिल सकता जो कि संकटों के समय पार्टी का साथ निभाते रहे लोगों को मिलता है।

लेकिन हाल ही में चौ. बन्सीलाल के कभी राजनीतिक लगोटिया दोस्त रहे चौ. सुल्तानसिंह एम. पी. के भजनलाल गुट में आ जाने से भजनलाल के खिलाफ झण्डा गाडने वालों में मायूसी अवश्य छा गई है। लेकिन चौ. सुल्तानसिंह का भजनलाल गुट में आने का भी कोई विशेष प्रयोजनकारी माना जाना चाहिए। क्योकि चौ. सुल्तानसिंह किसी समय भजनलाल के कट्टर विरोधियों में से रहे हैं। लेकिन अब उनके इस नाटकीय परिवर्तन से प्रदेश के राजनीतिक पर्यवेक्षकों का प्रयास है कि हरियाणा में प्रदेश कांग्रेस-इ की राजनीति में भारी उलटफेर होगा।

हालांकि बन्सीलाल गुट अभी चुपचाप बैठा हुआ है, लेकिन अगले चुनावों के दौरान वह महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। यह भूमिका बन्सीलाल के लिए वरदान व अभिशाप दोनों में से एक सिद्ध होकर रहेगी। या तो वह प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी के एक बार फिर से निकट आयेंगे अथवा ऐसी भी स्थिति आ सकती है कि श्रीमती गांधी से उनका हमेशा के लिए पत्ता कट जाय।

हरियाणा प्रदेश कांग्रेस-इ में सर्वाधिक खिचतान प्रदेशाध्यक्ष पद को लेकर (बन्सीलाल व भजनलाल दोनों ही गुटों में जाट तबके की यह मान्यता है कि इस पद पर जाट को बैठाया जाय। केन्द्र इस आग्रह को बराबर ठुकराता आ रहा है। उसका कारण यह है कि जब राज्य में मुख्यमन्त्री तथा तथा प्रदेशाध्यक्ष दोनों ही जाट थे तब जाट बाहुलय क्षेत्र में भी पार्टी सिर्फ 6 सीटें ले पाई थी। इस चक्कर में पंजाबियों को और नाराज करना पड़ा। हरियाणा में पंजाबी मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं इसलिए प्रदेशाध्यक्ष पद पर सरदार हरपालसिंह का बना रहना हर दृष्टिकोण से उचित ही है। वैसे भी इस पद के अलावा किसी अन्य महत्वपूर्ण पद पर पंजाबी को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि चौ. सुल्तानसिंह भजनलाल के साथ इसलिए आये है कि उन्हें प्रदेशाध्यक्ष बना दिया जाय। चौ. सुल्तानसिंह का दावा हैं कि ऐसा करने से देवीलाल के बाद प्रदेश में जाटों के प्रतिनिधित्व में जो रिक्तता बनी हुई है, वह कि भर जायेगी। बहुत सम्भव है पार्टी हाई कमान चौ. सुल्तानसिंह के सुझाव को मान ले। क्योंकि कांग्रेस-इ हाई कमान में भी एक भी जाट नहीं है। इसलिए यह सम्भव है कि हाई कमान हरियाणा में प्रदेशाध्यक्ष पद जाट को सौंप दे। यह भी सम्भव है कि चौ. सुल्तानसिंह को प्रदेश में पार्टी का महामन्त्री पद दे दिया जाय। लेकिन चौ. सुल्तानसिंह इस पद को अपने लिए काफी हल्का मानते हैं। उनकी इस भावना का आदर करते हुए उन्हें अ. भा. महासमिति में कोई पद दे दिया जाय।

बहरहाल, इन दिनों चौ. सुल्तान सिंह पार्टी की राजनीति के बारे में जो विचार प्रकट कर रहे हैं, उस पर मुख्यमन्त्री भजनलाल मौन हैं। मुख्यमन्त्री ने इस बात पर भी बाहर से कोई खुशी जाहिर नहीं की है कि चौ. सुल्तान सिंह उनके खेमे में आ गये हैं। लेकिन प्रदेशाध्यक्ष सरदार हरपाल सिंह ने अवश्य चौ. सुल्तानसिंह के बयानों के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की है और उन्होंने चौ. सुल्तानसिंह के व्यवहार के खिलाफ हाई कमान व श्री राजीव गांधी से शिकायत की है।

वैसे प्रदेशाध्यक्ष तथा मुख्य मन्त्री पदों के लिए निर्णय प्रधान मन्त्री स्वयं ही करती हैं। इसलिए चौ. सुल्तानसिंह की भाषणबाजी का प्रधानमन्त्री पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है। वे इतना अवश्य जानती हैं कि यदि हरपाल सिंह को प्रदेशाध्यक्ष पद से हटाया गया तो पार्टी एक और असन्तुष्ट गुट तो तैयार होगा ही, साथ ही अगले चुनावों में पार्टी को कांग्रेस-इ के वोटों से भी हाथ धोना पड़ेगा।

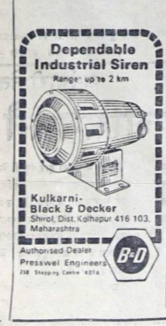

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

अधिकार दैनिक

मानवता सुख शांति प्रेम का, अखिल विश्व में हो विस्तार।
स्वतंत्रता का हनन न होवे, रहे सुरक्षित जन अधिकार ।।

दुर्भाग्यपूर्ण घटना

राज्यसभा, लोकसभा तथा राज्य विधान सभाएं लोकतंत्रीय व्यवस्था में सर्वाधिक शक्तिशाली व सम्मानित संस्थाएं होती हैं। यहां जन प्रतिनिधि जनता के हित में विचार-विमर्श कर फैसले करते हैं, कानून बनाते हैं। इन संस्थाओं के प्रांगण में कहा गया हर शब्द एक अहमियत रखता है। इसलिये लोकतन्त्र के संचालन का काम ये ही पवित्र सदन करते हैं। यदि इन्हीं सदनों में घटिया दर्जे के व्यवहार का प्रदर्शन हो तो फिर इससे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण बात क्या हो सकती है? इन सदनों में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को जनता अपना आदर्श मानती है, यदि ये ही लोग प्रतिकूल आचरण करने लगें तब उनके आराधक (मतदाता, जनता) पर क्या बीतती होगी, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

राजस्थान विधानसभा में 20 मार्च, 1982 को जो कुछ हुआ वह विधाई प्रणाली के लिए एक कलंक है। विधानसभा के माननीय सदस्य तू तू मैं-मैं व हाथापाई जैसे निम्न स्तर का व्यवहार करने लगे तो फिर इस प्रकार के सदनों के प्रति जन श्रद्धा को ठेस पहुंचती ही है।

विधानसभा के संचालन का दायित्व विधान सभाध्यक्ष को सौंपा जाता है लेकिन उसके समुचित संचालन में सभी का सहयोग अपेक्षित होता है। यदि सदन का एक पक्ष विधान की कारंवाई में जान-बूझ कर रोड़ा अटका रहा हो तब तो आसन का दायित्व तो कभी-कभी सदन में किसी मामले में पक्ष अथवा विपक्ष के सदस्यों के स्वाभाविक रोष को दबाना होता है लेकिन जब माननीय सदस्य पहले से ही सदन की कारंवाई न चलने देने की योजना बनाकर व उसके लिए सभी तरह से तैयार होकर आयें तब उस कृत्रिम अव्यवस्था को सम्भालना तो आसन के वश की बात भी नहीं है।

राजस्थान विधानसभा को निर्धारित समय से पूर्व स्थगित करने के सरकारी प्रस्ताव के विरुद्ध विपक्ष ने यह सब बावेला खड़ा किया। विपक्ष के कुछ सदस्यों ने इस मामले को लेकर विधान सभाध्यक्ष का घेराव करने की चेष्टा की। उनमें से कुछ ने अध्यक्ष के खिलाफ नारे भी लगाये। इससे वहां तनाव बढ़ गया। और अव्यवस्था फैलाने वाले सदस्यों को बलात सदन से बाहर निकाला गया।

मुख्य प्रश्न यह है कि क्या विपक्ष को अपनी बात मनवाने के लिए क्या इस प्रकार हथकण्डा अपनाना उचित है? शायद इसका उत्तर 'ना' में ही मिलेगा। यह ठीक है कि विपक्ष अपनी बात पर जोर डालता है लेकिन इसका आशय यह कतई नहीं कि वह सदन की मर्यादाओं को लांघने लगे यदि विपक्ष को यह लगने लगे कि आसन गलत या एक पक्षीय निर्णय ले रहा है तो इसके विरोध में वाक आउट की कारंवाई के साथ-साथ अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाया जा सकता है।

दूसरा मुद्दा यह है कि जब विपक्ष सदन में अव्यवस्था फैला रहा था तब सत्तापक्ष के सदस्यों ने विपक्ष के सदस्यों को बाहर निकालने में प्रहरियों की जो मदद की, क्या वह उचित थी? शायद उपरोक्त कारंवाई को अनुचित नहीं बताया जा सकता लेकिन यह भी बताया गया है कि पक्ष व विपक्ष के सदस्यों के बीच घूंसा-लातें भी चलीं। इसका अर्थ यह है कि सदन में अव्यवस्था पैदा करने में तो नहीं लेकिन उसका फैलाव करने के लिए सत्ता पक्ष को भी जिम्मेदार ठहराया जायेगा। क्योंकि सत्ता पक्ष का कर्तव्य सदन में व्यवस्था बनाये रखने के लिए सिर्फ रचनात्मक कदम ही उठाना चाहिए। यदि इस पर भी विपक्ष के सदस्य उन पर प्रहार करते तो उन्हें ये प्रहार सह लेने चाहिए थे। यदि सत्तापक्ष विपक्ष के प्रहारों को सह लेता तो जनता के सामने उसकी इज्जत और बढ़ती जबकि विपक्ष की प्रतिष्ठा धूल में मिल जाती। लेकिन व्यवस्था बनाने के लिए सत्तापक्ष द्वारा प्रहार का जवाब देना कतई उचित नहीं कहा जा सकता।

बहरहाल राज्य विधान सभा में जो कुछ हुआ, वह इस सदन के अब तक के धवल माथे पर कलंक लग गया। इस सदन के सदस्यों से अपेक्षा यह की जाती है कि वे अनाचार, अत्याचार के खिलाफ आवाज तो उठायेंगे लेकिन ऐसा किसी भी परिस्थिति में नहीं करेंगे जिससे कि सदन की गरिमा को किसी प्रकार की ठेस पहुंचती हो। जहां तक सदन में व्यवस्था व उसकी पवित्र गरिमाओं को बनाए रखने का सवाल है, उसको संयुक्त जिम्मेदारी वहन करनी चाहिए। भविष्य में इस प्रकार अप्रिय घटनाओं की पुनरावृति न हो इसके लिए सदन की विधाई समिति द्वारा कुछ सख्त कानून बनाने चाहिए और उन पर सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

गुरु हनुमान का अभिनन्दन होगा

चिड़ावा मार्च 21 (नि स)। युवा परिषद चिड़ावा द्वारा भारत विख्यात मल्ल विद्या के संरक्षक गुरु हनुमान का अभिनन्दन किया जा रहा है। इस अवसर पर उन्हें सिक्कों से भी तोला जायेगा। गुरु हनुमान के साथ उनके माने हुए शिष्य भी समारोह में भाग लेंगे।

भैंसे चुराने के आरोप में एक गिरफ्तार

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21। सोडाला पुलिस ने आज दोपहर एक व्यक्ति को भैंसे चुराने के आरोप में गिरफ्तार किया है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार गिरफ्तार मुलतान नामक व्यक्ति ने गत दिनों गांधी नगर क्षेत्र में तीन भैंसे एक दो ... से चुराये थे जिन्हें कल वह सोडाला में लगने वाले अठवाडे में बेच रहा था।

हत्या के आरोपी को जमानत

अजमेर। जिला सत्र न्यायाधीश रणबीरसहाय वर्मा ने ब्यावर में गत माह हुए भीलवाड़ा के नवयुवक श्याम सुन्दर पवार की हत्या के अभियोगी भीलवाडा के मथुरालाल सुनार की जमानत की अर्जी स्वीकार करने के आदेश दिए। ब्यावर मुन्सिफ मस्ट्रिेट के यहां बीस हजार के जमानत मुचलके पेश करने पर छोड़े जाने का आदेश दिया।

दि न मा न

मेष-लाभ की स्थिति में रहेंगे। वृष-यात्रा सफल रहेगी। मिथुन-शारीरिक कष्ट बढ़ेगा। कर्क-शुभ समाचार मिलेंगे। सिंह-आर्थिक भार बढ़ेगा। कन्या-कारोबार में रुकावट बनी रहेगी। तुला-मानसिक शांति में खलल पड़ेगा। वृश्चिक-आय कम व खर्च अधिक रहेगा। धनु-मित्र से मतभेद होगा। मकर-जायदाद के मामले में उलझें रहेंगे। कुम्भ-गृह क्लेश शान्त होगा। मीन-विरोधी हावी रहेंगे।

किसानों को खातेदारी के अधिकार दिये गये

सूरतगढ (निस)। राज्य सरकार द्वारा किसानों को खातेदारी के अधिकार दिये जाने के आदेशों की पालना, सहायक उपनिवेशन आयुक्त आत्मप्रकाश पारीक ने शुरू कर दी है।

पारीक ने बताया कि उनके अकेले द्वारा अब तक खातेदारी के योग्य 250 किसानों को स्वयं की भूमि खातेदारी अधिकार दिया गया है। केवल पटवारी एवं गिरदावर की रिपोर्ट के पश्चात यह कार्यवाही सम्पन्न कर दी जाती है।

प.स. खेतड़ी पर प्रदर्शन होगा

खेतड़ी, मार्च 21। राजस्थान संयुक्त कर्मचारी महासंघ की खेतड़ी शाखा की संघर्ष समिति के मन्त्री मगनलाल सुरेलिया के अनुसार 22 मार्च को प्रातः दस बजे पंचायत समिति खेतड़ी पर विशाल प्रदर्शन किया जायेगा।

महिला वालीवाल में जयपुर, कोटा के खिलाड़ी

जयपुर, 21 मार्च। दिल्ली में नवम्बर में होने वाले एशियाड 82 में भाग लेने वाली भारतीय महिला वालीबाल टीम की तैयारी के लिए गत सोमवार से पटियाला में प्रारम्भ हुए करीब एक माह के अखिल भारतीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने हेतु राजस्थान की रमा पांड़े जयपुर को चुना गया है।

पटियाला में ही 25 अप्रेल से शुरू होने वाले पुरुषों की टीम के लगभग छः सप्ताह के प्रशिक्षण शिविर के लिए राजस्थान के आर. के. पुरोहित लालजी प्रभाकर राजू (कोटा) एवं अशोक जैन (जयपुर) को आमंत्रित किया गया है।

कोटा के गोपालराम का नाम सुरक्षित खिलाड़ियों की सूची में पहले स्थान पर है।

तीन जने गिरफ्तार

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21। शहर पुलिस ने कल तीन व्यक्तियों को विभिन्न स्थानों से जेब काटने एव अवैध रूप से ध्वनि विस्तारक के आरोप में गिरफ्तार किया है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार जवाहर नगर पुलिस ने शेरा नामक युवक को सिटी बस में एक यात्री की जेब काटते हुये रंगे हाथ गिरफ्तार किया है तथा इसी प्रकार सूरजाराम नामक व्यक्ति को सट्टाबाजी करने के आरोप में पकड़ा है।

इसी प्रकार कोटवाडा पुलिस ने बगैर स्वीकृति के लाऊडस्पीकर बजाने के आरोप में सुरेश हरिजन को गिरफ्तार किया है।

चुंगी चोरी रोकी जावेगी

खेतड़ी। खेतड़ी नगरपालिका के निर्वाचित अध्यक्ष ताराचन्द शास्त्री ने व्यापारियों की एक सभा में कहा कि चुंगी चोरी को बर्दाश्त नहीं किया जावेगा। क्योंकि चुंगी की चोरी नगर विकास में बाधक होती है। अतः इस प्रवृति पर सख्ती से अमल किया जावेगा।

शास्त्री अध्यक्ष बनने के बाद व्यापारियों द्वारा आयोजित की गई एक मीटिंग में बोल रहे थे।

शास्त्री की इस घोषणा से कांग्रेस (आई) के नगर कांग्रेस (आई) अध्यक्ष विश्वनाथ शर्मा महामंत्री देवी दत्त तथा विरोधी गुट के भाजपा महामंत्री नन्दकिशोर पांडे भू.पू. नगरपालिका अध्यक्ष नन्दकिशोर शर्मा व नगरपालिका के निर्दलीय सदस्य सुलेमान खां ने मिलकर एक नया गठजोड़ शास्त्री के खिलाफ बनाया है।

युवक कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष अब्दुल ... दिग्विजयसिंह बाबूलाल मारवाल आदि ने प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष से इन खिलाफत करने वाले तत्वों को इनका सदस्यता से निष्कासित करने की मांग की है।

हड़ताल से कामकाज ठप्प, परीक्षाओं में डटकर नकल

(अधिकार संवाददाताओं द्वारा)

जयपुर, मार्च 21। प्रदेश में राज्य कर्मचारी हड़ताल होने के प्रदेश के विभिन्न भागों से समाचार मिल रहे हैं।

झुन्झुनूं

जिले में राज्य कर्मचारियों की हड़ताल के तीसरे दिन बोर्ड की प्रातःकालीन परीक्षायें 34में से 30 केन्द्रों में हो सकी और बगड़ में परीक्षा के आसार नहीं थे किन्तु जिला प्रशासन के प्रयासों से वहां भी परीक्षाएं हुईं। केवल सूरजगढ़ का जडा एव चिड़ावा में दो केन्द्रों में परीक्षायें नहीं ली गईं। जिले में बोर्ड की सायंकालीन परीक्षाएं भी शांतिपूर्वक सम्पन्न हुई। दोपहर जिला मुख्यालय पर जिलाधीश कार्यालय परिसर के बाहर हड़ताली कर्मचारी नारे लगाते रहे और भाषण करते रहे।

चिड़ावा

चिड़ावा के समस्त शिक्षक हड़ताल पर रहे। माध्यमिक स्तर की परीक्षायें बिजली विभाग के कर्मचारियों ने ली। परीक्षा में नकल की पूरी छूट रही।

बबाई

बबाई हायर सैकण्डरी स्कूल केन्द्र पर परीक्षायें अध्यापकगण ले रहे हैं। हायर सैकन्डरी स्कूल का कोईभी कर्मचारी हड़ताल में सम्मिलित नहीं है। जबकि गर्ल्स मिडिल स्कूल व प्राईमरी स्कूल कर्मचारियों के हड़ताल पर चले जाने की वजह से पूर्णतया बन्द हो गई हैं।

खेतड़ी

खेतड़ी जयसिंह हायर सेकण्डरी स्कूल केन्द्र पर परीक्षायें अन्य विभागों के व्यक्ति व रोड़वेज के कण्डक्टर ले रहे हैं।

एक बुकसेलर के अनुसार सभी विषयों की कुन्जियां पास बुक बिक गई हैं। बताया जाता है कि इस केन्द्र पर भारी मात्रा में नकल चल रही है।

सिरोही

आबूपर्वत से खबर है कि राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ के आव्हान पर जिले के विभिन्न कर्मचारी संघों द्वारा आम हड़ताल जिले के प्रमुख नगरों सिरोही, शिवगंज, आबूरोड़, आबूपर्वत में सरकारी कार्यालयों में कामकाज ठप्प रहा। विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर पुलिस व होमगार्ड ने परिवीक्षक कार्य किया। हड़ताली कर्मचारियों द्वारा जुलूस निकाले गये। जिला प्रशासन द्वारा हड़ताल को कुचलने के प्रयत्न जारी हैं।

अजमेर

अजमेर। यहां सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल रही। नगर परिषद कर्मचारियों ने भी हड़ताल पर जाने के लिए ब्यावर में जिला महासंघ की मीटिंग बुलाई। बोर्ड की परीक्षा में कई केन्द्रों पर कालेज के छात्र व बी. एड. के ट्रेनिंग वाले एवं होमगार्ड के जवानों को परीक्षक के तौर पर लगाया गया। कर्मचारियों ने कल भी जुलूस निकाला ब्यावर में कल अध्यापक व कर्मचारियों ने गलत विज्ञप्ति जारी करने के कारण ए. पी. आर. ओ. की पिटाई कर दी।

जिला सत्र न्यायालय के अलाव अन्य अदालतें नहीं खुली।

भाजपा के ब्यावर क्षेत्र के अध्यक्ष ने युवक कांग्रेस आई द्वारा हड़ताल के विरोध में कार्य करने की घोषणा की निन्दा की।

युवती के अपहरण के प्रयास में ५ जने बन्दी

(नगर संवाददाता)

जयपुर, मार्च 21। एक युवती का अपहरण करने आये पांच युवकों को आदर्श नगर पुलिस ने दो मोटर साईकिलों एवं एक रिवाल्वर तथा दो चाकुओं सहित गिरफ्तार किया है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार गिरफ्तार सभी जयपुर निवासी विजय सिंह, चन्द्रपाल, रवीन्द्र, मोहन एव रामलाल गत दिवस अशोक सर्किल के निकट आती हुई एक युवती को लेकर फरार होने की साजिश कर रहे थे तभी पुलिस ने उन्हें धर दबोचा।

पुलिस ने गिरफ्तार विजयसिंह के कब्जे से एक विदेशी रिवाल्वर तथा अन्य दो से चाकू बरामद किये हैं। पुलिस गिरफ्तार युवकों से अन्य पूछताछ कर रही है।

सीनियर हाकी अलवर में व जूनियर चूरू में

जयपुर, मार्च 21। राजस्थान सीनियर हाकी प्रतियोगता इस वर्ष अलवर में तथा जूनियर मुकाबले सादुलपुर (चुरू) में आयोजित किये जावेंगे।

राजस्थान हाकी संघ से प्राप्त सूचना के अनुसार तिथियों की घोषणा शीघ्र ही कर दी जावेगी।

दो सौ उदीयमान खिलाड़ियों को प्रशिक्षण

जयपुर। आबू पर्वत पर इसवर्ष 20 मई से आयोजित तीनसप्ताह के केन्द्रीय खेल प्रशिक्षण शिविर में प्रदेश के दो सौ से भी अधिक उदीयमान खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर के श्रेष्ठ प्रशिक्षकों की सेवाएं प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

नेताजी सुभाष राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान पटियाला ने भी राजस्थान खेल परिषद को इस कीशिविरअवधि के दौरान सुविधानुसार श्रेष्ठ प्रशिक्षक प्रतिनियुक्त करने का आश्वासन दिया है।

नौ जून तक चलने वाले शिविर में एथलेटिक्स, बास्केटबाल, क्रिकेट, फुटबाल, हाकी, वालीवाल में प्रशिक्षण दिया जावेगा।

राव वीरेन्द्र को ११ हजार रु. की थैली भेंट

गुडगांव, मार्च 21। कृषि मन्त्री भारत सरकार राव वीरेन्द्र सिंह ने ग्राम मलिकवास, जोनियावास तथा भांगरोला की भारी जनसभाओं को सम्बोधित किया उन्होंने गांव माकलवास के हाई स्कूल भवन का भी उद्घाटन किया तथा भांगरोला ग्राम में एक मिनी बैंक, बिजली सेवा केन्द्र तथा गांव की गलियों में बिजली का प्रकाश तथा प्राईमरी स्कूल के भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर भांगरोला ग्राम के सरपंच शोभा राम ने बताया कि गांव में चलाई जा रही योजना के अन्तर्गत 1 लाख 18 हजार रु. एकत्र किये गये।

गांव की ओर से राव बीरेन्द्र सिंह को जो 11 हजार रु. की थैली भेंट की गई थी वह थैली अपने क्षेत्र के लोगों को यह कह करके वापिस लौटा दी कि वह इस धन राशि को अपने गांव के विकास के कार्यों में प्रयोग लाये। कृषि मन्त्री ने प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को रावी ब्यास पानी के लिए बंटवारे का धन्यवाद दिया।

उन्होंने कहा कि सतलज जमना नहर से गुडगांव तथा महेन्द्रगढ क्षेत्र के किसानों को सिचाई के लिए पानी उपलब्ध हो सकेगा।

राव दिलीप सिंह विकास मंत्री हरियाणा ने अपने ऐच्छिक कोष से 30 हजार रु. की राशि स्कूल भवन तथा चार दिवारी के लिए प्रदान की।

राव बख्शी सिंह विधायक अटेली ने भी सभाओं को सम्बोधित किया।

उद्योगों में श्रमिकों की भागीदारी पर गोष्ठी

जयपुर, मार्च 21 [कात्र]। श्रमिक शिक्षा केन्द्र जयपुर और एम्प्लायर्स एसोसियेशनआफ राजस्थान के सहयोग से जयपुर में 'औद्योगिक सम्बन्धों में भागीदार पद्धति' विषय पर एक विचार गोष्ठी हुई।

श्रम आयुक्त धर्मवीर ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रबन्धक और श्रमिकों में आपसी विश्वास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश की प्रगति के लिए उद्योगों के प्रति अपनत्व की भावना होना बहुत आवश्यक है।

ऋण वसूल करने वालों ने आदिवासी कीजानें ली

डूंगरपुर (निस)। यहां से 40 कि.मी. दूर मेवाड़ा के पास बाटडा गांव के केन्द्रीय सहकारी बैंक का ऋण लेने वाले एक आदिवासी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

बताया जाता है कि बैंक के अधिकारी एक जीप से उक्त गांव पहुंचे और खोचा पुत्र सेंगा आदिवासीसेबैंक ऋण कीराशिमांगी। सोम ने कुछ राशि दे दी व बकाया बाद में देने को कहा। लेकिन बैंक अधिकारी उसे उसके कुए पर ले आये जहां उससे वाटरपम्प खोलने को कहा। जब वह वाटरपम्प खोलने लगा तो अधिकारियों ने उसे कुए में धक्का मार दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। बैंक अधिकारी तुरन्त जीप में बैठकर भाग गये बताये। पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम कर उसे उसके परिवारजनों को सौंप दिया।

श्रीराम मन्दिर में रामचरित नवाहर परायण

जयपुर मार्च 21। आदर्श नगर स्थित श्रीराम मन्दिर में डा. पी. डी. मेहरा के संयोजकत्व में आगामी 25 मार्च से 509 रामचरित मानस नवाहर परायण का आयोजन किया गया है।

इस नवदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिदिन प्रातः सात बजे से आठ बजे तक स्वामी ज्ञानानन्दजी का प्रवचन और सायं 7 से 10बजे तक नवाहर परायण पाठ होगा।

सफाई कार्य युद्ध स्तर पर

खेतड़ी। स्थानीय पालिका के निर्वाचित अध्यक्ष ताराचन्द शास्त्री ने कार्यभार ग्रहण करते ही सफाई एवं रोशनी की व्यवस्था के लिये युद्ध स्तर पर कार्य शुरू किया है।

फरीदाबाद : ६१४ औद्योगिक इकाइयों द्वारा उत्पादन

फरीदाबाद। हरियाणा सरकार की ग्रामीण औद्योगिकरण योजना के अन्तर्गत जिला फरीदाबाद में अब तक 614 औद्योगिक इकाइयों ने उत्पादन शुरू कर दिया है जिसमें से गत माह के दौरान 34 इकाइयों ने काम शुरू किया था।

उक्त जानकारी भास्कर चटर्जी उपायुक्त फरीदाबाद ने देते हुए कहा कि इस योजना के अन्तर्गत स्थापित की गई इकाइयों को अब तक कुल 87 लाख 27 हजार रु. का ऋण विभिन्न बैंकों द्वारा उपलब्ध करवाया जा चुका है।

इन स्थापित औद्योगिक यूनिटों को सीडमनी के रुप में अब तक कुल 2 लाख 28 हजार रु. वितरित किए गए है। इसके अतिरिक्त गत माह उद्योग लगाने के इच्छुक 18 उद्यमकर्ताओं के प्रार्थना पत्र बैंकों को जन सुविधाएं प्राप्त करने हेतु भेजे गए हैं।

राजस्थान विप्र सेवा समिति का गठन

जयपुर। समिति के संचालक मण्डल का इस प्रकार गठन किया है। अध्यक्ष 'चन्द्रभान शर्मा, वयोवृद्ध समाजसेवी व स्वतन्त्रतासेनानी उपाध्यक्ष कल्याण प्रसाद शर्मा, विद्या भूषण शर्मा, एडवोकेट, महामन्त्री कैलाशचन्द्र शर्मा, संयुक्त मन्त्री श्रीमती गुलाब देवी 'त्रिपाठी' बृजमोहन शर्मा, वित्तमन्त्री केदारनाथ त्रिवेदी, सलाहकार डा. ब्रजमोहन शर्मा, संगठनमन्त्री रामेश्वर दयाल शर्मा, प्रचारमन्त्री जगदीश नारायण शर्मा, आकाशवाणी कलाकार सदस्य जगदीश चन्द्र राजेन्द्र कुमार मुरलीधर मिश्रा, ललित किशोर शर्मा।

१७२३० नलकूपों का विद्युतिकरण

फरीदाबाद। भास्कर चटर्जी उपायुक्त फरीदाबाद ने हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड फरीदाबाद की विकास गतिविधियों के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि इस बिजली बोर्ड ने अब तक जिले में कुल 17230 से भी अधिक नलकूपों का विद्युतीकरण कर दिया है। चालू वित्त वर्ष के दौरान अब तक इस बोर्ड ने फरीदाबाद के 978 नलकूपों को बिजली के कनेक्शन दिए हैं।

उन्होंने आगे बताया कि जिला बिजली बोर्ड ने गत माह की अवधि में 60 नलकूपों को बिजली दी है इसके अतिरिक्त ट्यूबवेल के कनेक्शन प्राप्त करने के लिए जिला के 101 किसानों के प्रार्थना पत्र इस बोर्ड में पिछले महीने प्राप्त हुए जिन्हें शीघ्रातिशीघ्र बिजली के कनेक्शन दिलवाने के लिए बिजली बोर्ड प्रयत्नशील है। इसके प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम को सफल बनाने में मदद मिलेगी।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

कच्ची बस्तियों के लोगों को बरकतुल्ला की घोषणा के अनुसार बसाया जावे-भार्गव

(कार्यालय प्रतिनिधि)

जयपुर, मार्च 21। कच्ची बस्तियों के नियमन के सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री शिवचरण माथुर को ज्ञापन देकर भाजपा के नगर अध्यक्ष गिरधारी लाल भार्गव ने मांग की है कि कच्ची बस्तियों के लोगों को स्वर्गीय बरकतुल्ला की घोषणा के अनुसार जो जहां आबादी है उसे वहीं व्यवस्थित ढंग से बसाया जाय-तथा सबको 110 गज के भूखण्ड तीन रुपये प्रति वर्ग गज की दर से दिये जायें।

भार्गव ने आज एक संवाद-दाता सम्मेलन में जानकारी दी कि जयपुर नगर के उपान्त में कोई 165 कच्ची बस्तियां हैं जिनमें 2 लाख 44 हजार व्यक्ति रहते हैं।

उन्होंने पत्रकारों को बताया कि नियमन के नाम पर यू. आई. टी. उनको टीलों पर बसा रही है-तथा आय का आधार लेकर 5 रु. प्रति वर्ग गज से 40 प्रति वर्ग गज तक वसूल किया जा रहा है-उल्लेखनीय यह है कि यह सारा कार्य 'गरीब को छप्पर' संकल्प के तहत किया जा रहा है।

कच्ची बस्ती नियमन के संयोजक सोहनलाल ने बताया कि राजनैतिक द्वेष से प्रेरित होकर इन 165 कच्ची बस्तियों में से 13 को उजाड़ा जा रहा है-जिनमें कोई 10 हजार लोग रहते हैं। इनको यू. आई. टी. के अधिकारी मुरलीपुरा जाने के लिए विवश कर रहे हैं-जो यहां से लगभग 15 किलोमीटर दूर है।

उन्होंने कहा कि इनमें मजदूर, रिक्शा चालक, ठेली चालक जैसे साधारण लोग रहते हैं-जिनको उजाड ने की शाजिश की जा रही है।

भाजपा के नगर मन्त्री जमनेश दरगड़ ने कहा-धर्म नगर' जो पानी के बहाव में निवाई में बसा है उसे हटाया जाता है तो गम नहीं किन्तु शिवाजीनगर, व्यास कालोनी, जे.पी. कालोनी को राजनैतिक द्वेष भावना से हटाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि निचाई में होने तथा बहाव के खतरे में होने पर भी 'भट्टा कालोनी' उर्फ संजय नगर को नहीं हटाया जा रहा। इसी तरह भोमिया बस्ती भी डूब के खतरे मे है।

संयोजक सोहनलाल ने पत्रकारों को बताया कि रामनगर की एक कच्ची बस्ती तो वहां के पार्क में ही बस गई-जिसको यू. आई. टी. ने नियमों की ताक में रखकर वहीं बसाने का निर्णय लिया है।

उन्होंने कहा कि 'मास्टर प्लान' की आड लेकर जो भेदभाव बरता जा रहा है वह अनुचित है।

उन्होंने यह भी कहा कि कर्मचारियों की चार भत्ते की देय किश्तें सरकार पर और चढ़ गई हैं और विधानसभा के पूर्व सत्रों में किये गये वायदों तक को सरकार ने नहीं निभाया है।

कर्मचारी प्रवक्ता सत्यनारायण पारीक ने कहा कि राज्य सरकार को वेतन आयोग ने 15.9.81 को अपनी रिपोर्ट दे दी थी और कर्मचारी संघों के द्वारा हड़ताल की चेतावनी देने पर विशिष्ट सचिव सुधीर वर्मा ने महासंघ को दिये गये अपने पत्र में स्पष्ट कहा था कि इस रिपोर्ट पर 28 फरवरी तक अवश्य अन्तिम निर्णय लेलिया जायेगा।

प्रवक्ता के अनुसार राज्य कर्मचारियों की चार प्रमुख मांगें हैं ग्रामीण भत्ता दिया जाय, सेवानिवृत्ति की आयु 58 वर्ष की जावे, सभी केडर में 10 प्रतिशत पदोन्नति के स्थान तय किये जायें और जिन संघों ने अपने मांगपत्र दे रखे हैं उनको सहानुभूतिपूर्वक निपटाया जाय।

जनस्वास्थ्य विभाग

जयपुर, 22 मार्च। जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग के कर्मचारी पूरे राजस्थान में अपने समस्त कर्मचारियों के साथ हड़तालपर है। रेडियो, पत्रों, द्वारा कराया गया प्रचार कि जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग के कर्मचारी हड़ताल पर नहीं हैं, निराधार और तथ्यों के विपरीत है।

भार्गव, उजला व दरगड़ की कृपलानी को श्रद्धांजलि

जयपुर, 22 मार्च। शहर जिला जयपुर भारतीय जनतापार्टी के अध्यक्ष गिरधारी लाल भार्गव, महामन्त्री जमनेश दरगड़, विधायक डा. उजला अरोड़ा ने आचार्य जे. बी. कृपलानी की मृत्यु पर गहरा दु:ख प्रकट किया। आपने बताया कि कृपलानी का जीवन त्याग व बलिदान की कहानी है।

BAHU RANI

बहूरानी

बनारसी, मूंगा, प्रिन्ट कोटा चैक, साउथ सिल्क, अमेरिकन प्रिन्ट, फैन्सी साडियां, लहंगा व

चुन्नी सैट, चुन्डडी, पोले की साडियों के विक्रेता एवं आर्डर सप्लायर्स

सम्पर्क करें:—

फोन: 62697 173 जौहरी बाजार, जयपुर-2

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक 'विष्णु शर्मा अरुणेश' द्वारा सहकारी मुद्रणालय जयपुर में मुद्रित एवम् कानोता हाउस, रास्ता कोठी मनीरामजी, जयपुर-302003 से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक कृष्णकुमार सौरभ भारती। प्रबन्ध सम्पादक शेषकुमार। संयुक्त प्रबन्ध सम्पा० ६६ पुखराज जैन।

राज्य पथपरिवहन निगम में इन्टक कार्यकर्त्ताओं को परेशान करने का आरोप

जयपुर, मार्च 21। राजस्थान परिवहन निगम मजदूर कांग्रेस (इन्टक) के महामन्त्री हनुमान सहाय भारद्वाज ने मुख्यमन्त्री शिवचरण माथुर, श्रम मन्त्री बृजसुन्दर शर्मा एव यातायात मन्त्री जयकृष्ण शर्मा को पत्र लिखकर अवगत कराया है कि विरोधी संगठनों द्वारा 19 जनवरी को राजनैतिक भारत बन्द को रोड़वेज में इन्टक के आव्हान पर श्रमिकों ने बन्द को पूर्ण तरह विफल किया था।

भारद्वाज ने पत्र में लिखा है कि बन्द की विफलता से रोडवेज के भ्रष्ट अधिकारीगण एवं विरोधी संगठन के नेतागण बोखला गए एवं सुनियोजित तरीके से जगह जगह इन्टक के कार्यकर्ताओं के स्थानान्तरण, निलम्बन एवं सेवा-पृथक जैसी कार्यवाहियां भारी मात्रा में की जा रही है।

भारद्वाज ने पत्र में लिखा है कि सुनियोजित तरीके से इस प्रकार की कार्यवाही इन्टक संगठन को कमजोर करने के लिए की जा रही है जिससे भ्रष्ट तत्व अपनी की गई कार्यवाही पर पर्दा डाल सके।

भारद्वाज ने पत्र में मुख्यमन्त्री यातायात मन्त्री एवं श्रम मन्त्री से अनुरोध किया है कि परिवहन निगम में इन्टक कार्यकर्ताओं का शोषण तुरन्त बन्द किया जावे अन्यथा किसी भी स्तर का आंदोलन करने हेतु यह संगठन स्वतन्त्र होगा। जिसकी मात्र जिम्मेदारी राज्य सरकार की होगी।

—

23 को विशाल सभा

लालसोट तहसील का विशाल हिन्दू सम्मेलन 23 मार्च को आयोजित किया जा रहा है जिसे श्रमिक नेता धन प्रकाश त्यागी सम्बोधित करेंगे।

जयपुर दूरदर्शन

जयपुर, मार्च 21 (काप्र)। सोमवार, 22.3.82 के कार्यक्रम प्रात:काल 11-00 बजे प्राथमिक शिक्षा सन्त त्याग राज सायंकाल 6.30 बजे घर-गृहस्थी बहू-बहू या बेटी 7.05 बजे चौपाल 1. पशुओं की देखभाल, 2. फसल और बीज भण्डारण-सुरक्षात्मक उपाय 7.35 गजल सतीश बब्बर 7.40 बजे इससे मिलिए मातृ एवं शिशु चिकित्सक डा. श्रीमती प्रकाशवती भटनागर से भेंट 8.05 बजे आसपास

हरिजन महिला से सामुहिक बलात्कार

श्रीगंगानगर, मार्च 21 (भा)। रावतसर कस्बे में एक हरिजन विवाहिता युवती के साथ सातजनों द्वारा सामूहिक रूप से बलात्कार करने की जानकारी मिली है।

जिला पुलिस मुख्यालय से प्राप्त अधिकृत सूचना के अनुसार जुडावता नामक एक हरिजनयुवती को घर में अकेली देखकर उसी गांव के सात व्यक्ति उसके घर में घुस गये और बारी-बारी से उसके साथ बलात्कार किया।

पुलिस मामले की जांच कर रही हैं।

कम सन्तान

सुखी इन्सान

हाउस फुल हाउस फुल

ये नजदीकियां

[केवल व्यस्कों के लिए]

सम्राट में

रोजाना ४ शो में

12।, 3।, 6।व 9। बजे

एडवान्स बुकिंग शाम 7॥ से 8॥ बजे तक चालू है।

अन्तिम दिनों में

नई कापी में

- परदे में रहने दो परदा न····
- हाय मेरे पास तो आ किधर··
- तु हारे प्यार में बेकरार होके···
- मैं अलबेली प्यार जताकर····

शिकार

धर्मेन्द्र; आशापारिख; संजीवकुमार रहमान; हेलन; धानीवाकर

अम्बर सिनेमा में

रोजाना सायं 6॥ व 9॥ बजे

आपके गुलाबी नगर में कई वर्षों बाद प्रिन्स पधार रहे हैं हर जवान दिलवालों के लिये नई मस्ती

[] बदन पे सितारे लपेटे हुए····

[] मुकाबला हमसे ना करो····

जयपुर के सर्वश्रेष्ठ छविगृहों में ता.—से

अतिशीघ्र प्रदर्शित हो रहा है

बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, बैंगलौर आदि बड शहरों में आय का रिकार्ड कायम करने के बाद राजस्थान के आठ बड़े शहरों में व जयपुर के दो सर्वश्रेष्ठ छविगृहों में एक साथ—

अश्वनी चित्र कृत—

एक और एक ग्यारह

पात्र-विनोदखन्ना-शशि कपूर-नीतू-सिंह-जरीना वहाब-प्रेम-चोपडा आदि

बड़े बड़े शहरों में हंगामा करने के बाद आपके शहर में

अति शीघ्र आ रहा है

नवजवानों के दिलों में नई उमंग को लेकर जितेन्द्र पधार रहे हैं

दो कदम तुम न चले दो कदम हम न चले....

हे-रे-रामा-हे-रे-रामा..... कैसा आया ई जमाना......

आर. जी. फिल्मस कृत

एक हसीना दो दीवाने

ईस्टमैन कलर में

निर्देशक	संगीत	निर्माता
कांती भाई जेवरी	एस. एम. अब्बास	कल्याण जी आनन्दजी

सिनेमा व तारीख की प्रतिक्षा में

श्रद्धादेवी का ६५ वां दिवस

राज मन्दिर में

12॥, 3॥, 6॥, व 9॥ बजे

नोट :- एडवांस बुकिंग 7॥ से 8॥ बजे तक चालू है।

अन्तिम ४ दिन

- मेरी आवाज के दोस्तों........
- मुझको हवाओ ने रोक........

जैम में रोजाना ४ शो

12॥, 3॥, 6॥ व 9॥ बजे

हाउस फुल हाउस फुल

सत्ते पे सत्ता

प्रेम में रोजाना 4 शो

12, 3, 6 व 9॥ बजे

प्रेम में एडवान्स बुकिंग दोपहर 1॥ से 2॥ सायं 7॥ से 8॥ बजे तक चालू रहेगी।

शान से चल रहा है

न्यू ग्रान्ड कापी में

धर्मेन्द्र v/s प्रेम चोपडा व अजीत का जबरदस्त धमाका

फानुस बनके जिसकी हिफाजत हवा करे वो शर्मा क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे

हेमामालिनी का जोशीला अभिनय

प्रमोद चक्रवर्ती की जुबली फिल्म

- गिर गया झुमका उड गई...
- जब बागों में जुगनू चमके...
- तेरा पीछा ना छोडूंगा...

जुगनू

(ईस्टमैन कलर)!

पोलो विक्ट्री में रोजाना 4 शो

12॥, 3॥, 6॥ व 9॥ बजे

प्रतिशीघ्र आ रहा है एक साथ दो छविगह में

पात्र-राकेश रोशन, रामेश्वरी, राज किरन, सारिका, विजेन्द्र, हेलन और कादर खान।

संगीत	गीत
राजेश रोशन	अनजान

महिलाओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी

शालीमार में रोजाना ४शो 12॥, 3॥, 6॥ व 9॥ बजे

एडवान्स बुकिंग हर टाइम के अलावा चालू है

अन्तिम दिनों में

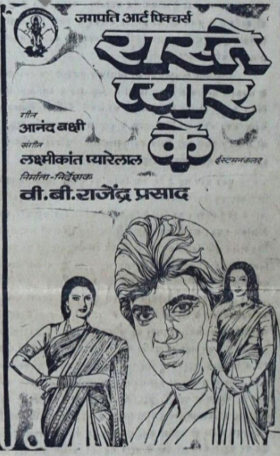

अम्बर में रोजाना २ शो 12॥ व 3॥ बजे

ता.——से भव्य शुभारम्भ

राजस्थान में निर्मित 11 वीं सदी की एक ऐतिहासिक वीर गाथा। "पृथ्वीराज चौहान पर आधारित फिल्म जिसकी शूटिंग अधिकतर उदयपुर में पूरी हुई।

1. दुश्मन फिर सिर पर आ पहुंचा भारत मां ने पुकारा है·······
2. हमें मिटाने आया जो खुद मिट जाएगा कहते हैं हम ललकार के····

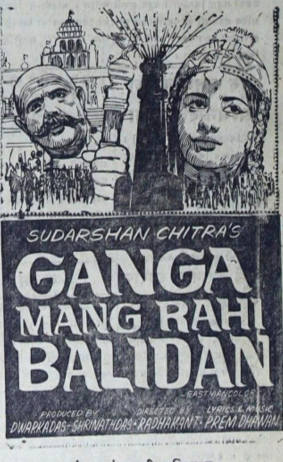

गंगा मांग रही बलिदान

राजस्थान के आठ बड़े शहरों में एक साथ

मयूर व ???